विषय पृष्ठ

## उपदेशिक ढालां—

गुणे करी सहित छै ते कहै छै—१४ चवदे पूरब ११ इग्यारे अंग भणे भणावे।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपांग भणे भणावे।

## ॥ णमो लोए सव्व साहूणं ॥

नमस्कार थावो लोकने विषे सर्व साधु मुनिराजोंने

ते साधु मुनिराज केहवा छै सतवीस गुणे करी सहित छै ते कहै छै—५ पंच महाव्रत पाले ५ इन्द्री जीते ४ च्यार कषाय टाले भाव संचय १५ करण संचय १६ जोग संचय १७ क्षमावंत १८ वैराग्यवंत १९ मन समा धारणिया २० वचन समा धारणिया २१ काय समाधारणिया २२ नाण संपना २३ दर्शन संपना २४ चारित्र संपना २५ वेदनी आयां समो अहियासे २६ मरण आयां समो अहियासे २७

## २४ तीर्थंकरों के नाम।

१ पहला श्री ऋषभनाथजी।

२ दूजा श्री अजितनाथ स्वामीजी।

३ तीजा श्री सम्भवनाथ स्वामीजी।
४ चौथा श्री अभिनन्दननाथ स्वामीजी।
५ पांचवां श्री सुमतिनाथ स्वामीजी।
६ छट्ठा श्री पद्मप्रभु स्वामीजी।
७ सातवां श्री सुपारसनाथ स्वामीजी।
८ आठवां श्री चन्द्रप्रभ स्वामीजी।
९ नवमां श्री सुविधनाथ स्वामीजी।
१० दशवां श्री शीतलनाथ स्वामीजी।
११ इग्यारमां श्री श्रेयांसनाथ स्वामीजी।
१२ बारमां श्री वासुपूज्यनाथ स्वामीजी।
१३ तेरमां श्री विमलनाथ स्वामीजी।
१४ चौदमां श्री अनन्तनाथ स्वामीजी।
१५ पन्दरमां श्री धर्मनाथ स्वामीजी।
१६ सोलमां श्री शान्तिनाथ स्वामीजी।
१७ सतरमां श्री कुंथुनाथ स्वामीजी।
१८ अठारमां श्री अरनाथ स्वामीजी।
१९ उगणीसमां श्री मल्लिनाथ स्वामीजी।
२० बीसमां श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामीजी।

| | |
|---|---|
| ११ शैव्या | १४ चेलणा |
| १२ कुन्ती | १५ प्रभावती |
| १३ दमयन्ती | १६ पद्मावती |

## चत्तारि मंगलं की पाटी।

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धामंगलं, साहुमंगलं, केवलि पन्नन्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपन्नन्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि, सिद्धासरणं पवज्जामि, साहुसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नन्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ए चार शरणा सगा और सगा नहीं कोय।
जो नर नारी आदरे अक्षय अमर पद होय॥

## अथ श्री साधु वन्दना।

नमूं अनंत चौवीसो, ऋषभादिक महावीर। आर्य क्षेत्र मां घाली धर्म नी सीर॥१॥ महा अतुल्य बली नर, शूरवीर ने धीर। तीरथ प्रवर्त्तावी, पहोंता

॥ मुरू० ॥ ४ ॥ चन्द चकोरन के मनमें, गाज आवाज होवे घनमें। पिय अभिलाषा ज्यों त्रिय तनमें, त्यों वसियो तं मो चित्त मनमें ॥ मुरू० ॥ ५ ॥ जो सुनजर साहिब तेरी, तो मानो विनती मेरी। काटो भरम करम बेरी, प्रभु पुनरपि नहिं परूं भव फेरी ॥ मुरू० ॥ ६ ॥ आतम ज्ञान दशा जागी, प्रभु तुम सेती मेरी लौ लागी। अन्य देव भ्रमना भागी, विनैचन्द निहारो अनुरागी ॥ मुरू० ॥ ७ ॥

## ९-श्री सुविधनाथजी का स्तवन।

॥ बुढापो वेरी आवियो हो ॥ पदेशी ॥

श्री सुविध जिणेसर वंदिये हो ॥ टेर ॥ काकंदी नगरी भली हो, श्री सुग्रीव नृपाल। रामा तसु पट रागनी हो, तस सुत परम कृपाल ॥ श्रीसु० ॥१॥ त्यागी प्रभुना राजनी हो, लीधो संजम भार। निज आतम अनुभाव थी हो, पाम्या प्रभु पद अविकारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ अष्ट कर्म नो राजवी हो,

मोह प्रथम क्षय कीन। सुध समकित चारित्र नो हो, परम क्षायक गुणलीन ॥ श्री० ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी दर्शणावरणी हो, अन्तरायके अन्त। ज्ञान दरशण बल ये त्रिहूं हो. प्रगट्या अनन्ता अनन्त ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अघा घात सुख पामिया हो, आयु क्षय करनें श्री जिनराय ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नाम करम नो क्षय करी हो, अमूर्त्तिक कहाय। अगुरु लघू पण अनुभव्यो हो, गोत्र करम मूकाय ॥ श्री० ॥ ६ ॥ आठ गुणा कर ओलख्या हो, जात रूप भगवन्त। विनैचन्द के उर बसो हो, अह निश प्रभु पुष्पदंत ॥ श्री० ॥ ७ ॥

## १०-श्री शीतलनाथजीकी स्तुति।

॥ जिड़वारो ॥ परदेशी ॥

जय जय जिन त्रिभुवन धणी ॥ टेर ॥

श्री दृढ़रथ नृपति पिता. नन्दा थारी माय। रोम रोम प्रभु मो भणी शीतल नाम सुहाय ॥ जय० ॥ १ ॥ करुणा निध करनार, सेव्यां सुर

लरु जेहवो। वांछित सुख दातार ॥ जय० ॥ २ ॥ प्राण पियारो तूं प्रभु, पतिवरता पति जेम। लगन निरन्तर लग रही, दिन दिन अधिको प्रेम ॥ जय० ॥३॥ शीतल चन्दननी परें, जपना निश दिन जाप। विषय कषाय ना ऊपनें, मेटो भव दुःख ताप ॥ जय० ॥ ४ ॥ आरत रुद्र प्रणाम थी, उपजै चिन्ता अनेक। ते दुःख काटो मानसी, आपो अचल विवेक ॥ जय० ॥ ५ ॥ रोगादिक क्षुधा तृषा, सब शस्त्र अस्त्र प्रहार। सकल शरीरी दुःख हरो, दिल सूं थिरुद विचार ॥ जय० ॥ ६ ॥ सुपरसन्न होय शीतल प्रभु, तूं आशा विसराम। विनैचन्द कहै मो भणी, दीजै मुक्ति मुकाम ॥ जय० ॥ ७ ॥

## ११-श्री श्रेयांसप्रभुकी स्तुति।

॥ राग कार्फी देशी होरी की ॥

श्रेयांस जिनन्द सुमर रे ॥ टेर ॥

चेतन जाण कल्याण करन को; आन मिल्यो अवसर रे। शास्त्र प्रमान पिछान प्रभु गुन, मन

अचल थिर कर रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ श्वास उश्वास
विलास भजन को, दृढ़ विश्वास पकर रे। अजपा
ध्यास प्रकाश हिये विच, सो सुमरन जिनवर रे
। श्री० ॥ २ ॥ कंद्रप क्रोध लोभ मद माया, ये
सबही पर हर रे। सम्यक दृष्टि सहज सुख प्रगटै,
ज्ञान दशा अनुसर रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ झूंठ प्रपंच
जीवन तन धन अरु, सजन सनेही घर रे। छिनमें
छोड़ चले पर भवकूं, बान्ध शुभाशुभ थर रे ॥श्री०
। ४ ॥ मानस जनम पदारथ जिनकी, आशा
करत अमर रे। ते पूरव सुकृत कर पायो, धरम
मरम दिल भर रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ विश्वसैन नृप
विला राणी को, नन्दन तूं न विसर रे। सहज
मिटै अज्ञान अविद्या, मुक्त पंथ पग धर रे ॥ श्री०
॥६॥ तूं अविकार विचार आतम गुण, भ्रम जंजाल
न पर रे। पुद्गल चाप मिटाय विनैचन्द, तूं जिनते
न अवर रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

जिनैचन्द विनवै। आपो सुख श्रीकार हो॥ सौभागी॥ ७॥

## १७-श्रीकुंथुनाथ स्वामीका स्तवन।

॥ रेखता ॥

कुन्थ जिणराज तूं ऐसो, नहीं कोई देवतूं जैसो। त्रिलोकीनाथ तूं कहिये, हमारी बांह दृढ गहिये॥ कुंथ०॥ १॥ भवोदधि डूबतो तारो, कृपानिधि आसरो भारो। भरोसा आपका भारी, विचारो विरद उपकारी॥ कुंथ०॥ २॥ उमाहुं मिलन को तोसे, न राखो आंतरा मोसे। जैसी सिद्ध अवस्था तेरी, तैसी चेतन्यता मेरी॥ कुंथ॥ ३॥ करम भ्रम जाल को दपट्यो, विषय सुख ममत में लपट्यो। भ्रम्यो हूं चिहूं गति माहीं, उदै कर्म भ्रम की छांही॥ कुंथ॥ ४॥ उदै को जोर है जौलूं, न छूटै विषय सुख तौलूं। कृपा गुरुदेवकी पाई, निजातम भावना आई॥ कुंथ॥ ५॥ अजब अनुभूति उर जागी, सुरति निज सूर्य में लागी।

उपयोगी सरूप चिदानन्द, जिनवर ने तूं एक। द्वैत अविद्या विभ्रम मेटो, याचै शुद्ध विवेक॥ साहिब० ॥ ५ ॥ अलख अरूप अखण्डित अविचल, अगम अगोचर आपै। निरविकल्प निकलंक निरञ्जन अद्भुत जोति अमापै॥ साहिब० ॥ ६ ॥ ओलख अनुभव अमृत याको, प्रेम सहित नित पीजै। ह्वं तूं छोड़ विनैचन्द अन्तस, आतम राम रमीजै॥ साहिब० ॥ ७ ॥

## १६-श्री मल्लिनाथ स्वामीजी का स्तवन।

॥ लावणी ॥

मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी, कुम्भ पिता परभावती मइया। तिनकी कुंवारी॥ टेक॥ मानी कूंख कन्दरा मांही, उपना अवतारी। मालती कुसुम मालनी वांछा, जननी उरधारी॥ म० ॥१॥ तिणथी नाम मल्लि जिन थाप्यो, त्रिभुवन प्रिय

कारी। अद्भुत चरित्र तुम्हारा प्रभुजी, वेद भण्यो नारी ॥ म० ॥ २ ॥ परणन काज जान सज आये, भूपति छः भारी। मिथिलापुरी घेरि चौतरफा, सेना विस्तारी ॥ म० ॥ ३ ॥ राजा कुम्भ प्रकाशी तुम पैं, पीतक विधि सारी। छहुं नृप जान सजी तो परणन, आया अहंकारी ॥ म० ॥ ४ ॥ श्रीमुख धीरप दीधी पिताने, राख्यो हुंशियारी। पुतली एक रची निज आकृत, पोथी ढकधारी ॥ म० ॥५॥ भोजन सरस भरी सा पुतली, श्रीजिण शिणगारी। नृपति छहूं बुलाया मन्दिर, पीच पहु दिना पारी ॥ म० ॥ ६ ॥ पुतली देख छहूं नृप मोह्या, अवसर विचारी। ढाक उघार लीनो पुतली को, भभक्यो अति भारी ॥ म० ॥ ७ ॥ दुसह दुर्गन्ध सही न जावे, ऊठ्या नृप हारी। तव उपदेश दियो श्रीमुख सूं, मोह दशा टारी ॥ म० ॥ ८ ॥ महा असार उदारक देही, पुतली इव प्यारी। संग किया पटके भव दुःख में, नारि नरक वारी ॥ म० ॥ ६॥ नृप छहूं प्रति बोधे मुनि होय,

रे ॥ प्रा० ॥ तिमर उद्योत प्रभा कछु नाहीं, आतम अनुभव मांहि रे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ सुख दुख जीवन मरन अवस्था, ए दश प्राण संघात रे ॥ प्रा० ॥ इणथी भिन्न विनैचन्द रहिये, ज्यों जल में जल जात रे ॥ प्रा० ॥ श्री० ॥ ७ ॥

---

## ॥ कलश ॥

चौवीस तीरथ नाम कीरति,
गावतां मन गहू गहे।
कुमर गोकुलचन्द नन्दन,
विनैचन्द इणपर कहे॥
उपदेश पूज्य हमीर मुनिको,
तत्त्व निज उरमें धरी।
उगणीस सौ छः के छमच्छर,
चतुर्विंशति स्तुति इम करी॥

# अनुपूर्वी ।

जहाँ १ है वहाँ नमो अरिहंताणं बोलना।
जहाँ २ है वहाँ नमो सिद्धाणं बोलना।
जहाँ ३ है वहाँ नमो आयरियाणं बोलना।
जहाँ ४ है वहाँ नमो उवज्झायाणं बोलना।
जहाँ ५ है वहाँ नमो लोए सव्वसाहूणं बोलना।

## अनुपूर्वी गुणने का फल ।

अनुपूर्वी गुणिये जोय,
छः मासी तपनो फल होय।
संदेह मत आणो लिगार,
निर्मल मने जपो नवकार ।१।
शुद्ध वस्त्र धरि विवेक,
दिन दिन प्रत्ये गिणवी एक।
एम अनुपूर्वी जे गुणे,
ते पांच सो सागरना पापने हणे ।२।

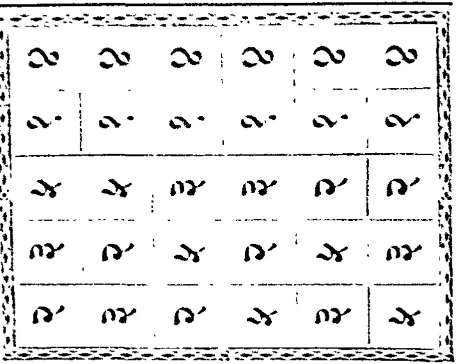
अशुभ कर्म के हरण को, मंत्र बडो नवकार।
वाणी द्वादश अङ्ग में, देख लियो तत्व सार ॥ ३ ॥

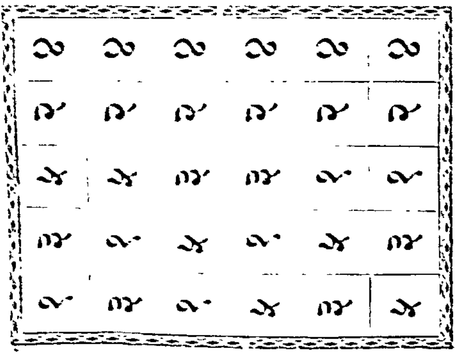
| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| २ | ३ | ४ | १ | ५ |
| ३ | २ | ४ | १ | ५ |
| २ | ४ | ३ | १ | ५ |
| ४ | २ | ३ | १ | ५ |
| ३ | ४ | २ | १ | ५ |
| ४ | ३ | २ | १ | ५ |

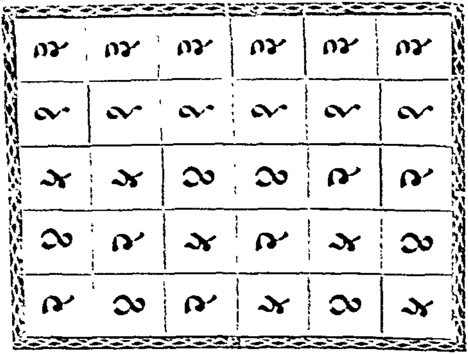
| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ४ | २ | ५ |
| ३ | १ | ४ | २ | ५ |
| १ | ४ | ३ | २ | ५ |
| ४ | १ | ३ | २ | ५ |
| ३ | ४ | १ | २ | ५ |
| ४ | ३ | १ | २ | ५ |

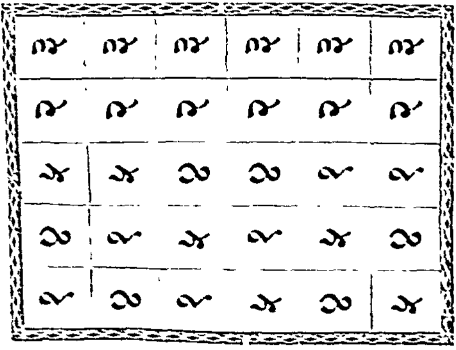
| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ५ | ४ |
| २ | १ | ३ | ५ | ४ |
| १ | ३ | २ | ५ | ४ |
| ३ | १ | २ | ५ | ४ |
| २ | ३ | १ | ५ | ४ |
| ३ | २ | १ | ५ | ४ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ५ | ३ | ४ |
| २ | १ | ५ | ३ | ४ |
| १ | ५ | २ | ३ | ४ |
| ५ | १ | २ | ३ | ४ |
| २ | ५ | १ | ३ | ४ |
| ५ | २ | १ | ३ | ४ |









| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ५ | ४ | २ |
| ३ | १ | ५ | ४ | २ |
| १ | ५ | ३ | ४ | २ |
| ५ | १ | ३ | ४ | २ |
| ३ | ५ | १ | ४ | २ |
| ५ | ३ | १ | ४ | २ |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ४ | ५ | २ |
| ३ | १ | ४ | ५ | २ |
| १ | ४ | ३ | ५ | २ |
| ४ | १ | ३ | ५ | २ |
| ३ | ४ | १ | ५ | २ |
| ४ | ३ | १ | ५ | २ |

## अथ श्री सोलह सतीनो स्तवन।

आदिनाथ आदि जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजिये ए॥ प्रभाते उठी मङ्गलीक कामे, सोलह सतीना नाम लीजिये ए ॥१॥ बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी भरतनी बहेनड़ी ए। घट २ व्यापक अक्षर रूपे सोलह सती मांहि जे वड़ी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगिनी सतिय शिरोमणि, सुन्दरी नामे ऋषभ सुता ए। अंक स्वरूपी त्रिभुवन मांहिं, जेह अनोपम गुण युता ए॥ ३॥ चन्दनबाला बालपणे थी, शीयलवती शुद्ध श्राविका ए। उड़दना बाकुला वीर प्रतिलाभ्या, केवल लही व्रत भाविका ए॥ ४॥ उग्रसेन धुया धारणी नंदनी, राजमती नेम वल्लभा ए। यौवन वेशे काम ने जीत्यो, संयम लेई देव दुल्लभा ए॥ ५॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपद तनया वखाणिये ए। एक सौ आठे चीर पुराना, शीयल महिमा तस जाणिये ए॥ ६॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम,

त्रिविधे तेहने वन्दिये ए। नाम जपंतां पातक जाए, दर्शन दुरित निकन्दिये ए ॥ १४ ॥ निषधा-नगरी नलह नरिन्दनी, दमयन्ती तस गेहिनी ए। संकट पड़तां शीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनङ्ग अजिता जग जन पूजिता, पुष्पचुला ने प्रभावती ए। विश्व विख्याता कामित दाता, सोलमी सती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे भाखी शास्त्रे साखी, उदय रतन भाखे मुदा ए। वाहणु वहता जे नर भणशे, ते लेशे सुख सम्पदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

राजवी, राय प्रह्लाद विद्याधर तामक। तेहनो पुत्र अति दीपतो, पवनकुमार छै तेहनो नामक॥ अञ्जना ने वर योग छै, ए राजा कियो वचन प्रमाणक। पीछे दूत मेल्यो तिण नगरी में, सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक॥ स०॥ ५॥ रूप ने गुण अञ्जना तणो, प्रगट हुवो छै लोक में तामक। ते पवनकुमार पिण सांभल्यो, जय प्रहस्त मन्त्री ने कहे छै. आनक॥ कठे आपां जावां रूप फेरने, जोवाने अंजना तणो रूप शिणगारक। पीछे मतो करी दोनूं नीसला, ते आय ऊभा महल तले तिण वारक॥ स०॥ ६॥ हिवे पवनजी निरखे छै अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली रख्यो दिष्टक। रूप में जाणे देवांगणां, वाणी बोले जाणे कोयल वाणक। चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्या जाणै मृगनैन समानक॥ स०॥ ७॥ अञ्जना बैठी सिंघासणे, दोनूं पासे अनेक सखियां तणा वृन्दक। वस्त्र आभूषण अंगे धला, शोभ रही जाणे पूनम चंदक॥ हिवे वसन्त माला इम उचरे, बाई ने जोग

जाई एक बालिका, अञ्जना कुंवरी छै तेहनो नामक ॥ सती रे शिरोमणि अञ्जना ॥ १ ॥ मात पिता नें बाहली घणी, बंधव सगलां ने गमती अत्यन्तक। रूप में छै रलियामणी, नैण दीठां घणो हरप धरं-तक ॥ सजन सगा ने सुहामणी, सखी सहेलियां में रही नित खेलक। पिया भणी मुख अति घणी, दिन दिन वधे जिम चम्पक वेलक ॥ स० ॥ २ ॥ अञ्जना कुंवरी मोटी हुई, चिन्तवी ने राय चित्त मझारक। पछै वेग प्रधान तेड़ावियो, कहे अञ्जना वर तणो करो रे विचारक ॥ जब एक कहे रावण ने दीजिये, एक कहे दीजे मेघ कुमारक। ते पुत्र छै राजा रावण तणो, निणरो जोवन रूप घणो श्रीकारक ॥ स० ॥ ३ ॥ जब एक कहे इम सांभलो, वरप अठारमें मेघ कुमारक। चारित्र लेसी वैराग सूं, वरप छावीस में जासी मोक्ष मझारक ॥ तो कन्या ने सुख किहां थकी, सगलाई कर देखो मन में विचारक। मेघ कुमार ने यो मती, और विचारो कोई राज कुमारक ॥ स० ॥ ४ ॥ रतनपुरी तणो

राजवी, राय प्रह्लाद विद्याधर तामक। तेहनो पुत्र अति दीपतो, पवनकुमार छै तेहनो नामक॥ अञ्जना ने वर योग छै, ए राजा कियो वचन प्रमाणक। पीछे दूत मेल्यो तिण नगरी में, सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक॥ स०॥ ५॥ रूप ने गुण अञ्जना तणो, प्रगट हुवो छै लोक में तामक। ते पवनकुमार पिण सांभल्यो, जब प्रहस्त मन्त्री ने कहे छै. आनक॥ ऊठे आपां जावां रूप फेरने, जोवाने अंजना तणो रूप शिणगारक। पीछे मतो करी दोनूं नीसला, ते आय ऊभा महल तले तिण वारक॥ स०॥ ६॥ हिवे पवनजी निरखे छै अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली रखो द्रिष्टक। रूप में जाणे देवांगणां, वाणी बोले जाणे कोयल वाणक। चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्यां जाणै मृगनैन समानक॥ स०॥ ७॥ अञ्जना बैठी सिंघासणे, दोनूं पासे अनेक सखियां तणा वृन्दक। वस्त्र आभूषण अंगे धर्या, शोभ रही जाणे पूनम चंदक॥ हिवे पसन्त माला इम उचरे, पाई ने जोग

राजवी, राय प्रह्लाद विद्याधर तामक। तेहनो पुत्र अति दीपतो, पवनकुमार छै तेहनो नामक॥ अञ्जना ने वर योग छै, ए राजा कियो वचन प्रमाःणक। पीछे दूत मेल्यो तिण नगरी में, सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक॥ स०॥ ५॥ रूप ने गुण अञ्जना तणो, प्रगट हुवो छै लोक में तामक। ते पवनकुमार पिण सांभल्यो, जव प्रहस्त मन्त्री ने कहे छै. आमक॥ कहे आपां जावां रूप फेरने, जोवाने अंजना तणो रूप शिणगारक। पीछे मतो करी दोनूं नीसत्या, ते आप ऊभा महल तले तिण वारक॥ स०॥ ६॥ हिवे पवनजी निरखे छै अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली राख्यो दिष्टक। रूप में जाणे देवांगणां, वाणी बोले जाणे कोयल वाणक। चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्या जाणै मृगनैन समानक॥ स०॥ ७॥ अञ्जना बैठी सिंघासणे, दोनूं पासे अनेक सखियां तणा वृन्दक। वस्त्र आभूषण अंगे धख्या, शोभ रही जाणे पूनम चंदक॥ हिवे वसन्त माला इम उचरे, बाई ने जोग

राजवी, राय प्रह्लाद विद्याधर तामक। तेहनो पुत्र अति दीपतो, पवनकुमार छै तेहनो नामक ॥ अञ्जना ने वर योग छै, ए राजा कियो वचन प्रमाणक। पीछे दूत मेल्यो तिण नगरी में, सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक ॥ स० ॥ ५ ॥ रूप ने गुण अञ्जना तणो, प्रगट हुवो छै लोक में तामक। ते पवनकुमार पिण सांभल्यो, जय प्रहस्त मन्त्री ने कहे छै. आनक ॥ कहे आपां जावां रूप फेरने, जोवाने अंजना तणो रूप शिणगारक। पीछे मतो करी दोनूं नीसला, ते आय उभा महल तले तिण वारक ॥ स० ॥ ६ ॥ हिवे पवनजी निरखे छै अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली रखो दिष्टक। रूप में जाणे देवांगणां, वाणी बोले जाणे कोयल बाणक। चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्या जाणै मृगनैन समानक ॥ स० ॥ ७ ॥ अञ्जना बैठी सिंघासणे, दोनूं पासे अनेक सखियां तणा वृन्दक। वस्त्र आभूषण अंगे धरा, शोभ रही जाणे पूनम चंदक ॥ हिवे बसन्त माला इम उचरे, पाई ने जोग

राजवी, राय प्रह्लाद विद्याधर तामक। तेहनो पुत्र अति दीपतो, पवनकुमार छै तेहनो नामक॥ अञ्जना ने वर योग छै, ए राजा कियो वचन प्रमाणक। पीछे दूत मेल्यो तिण नगरी में, सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक॥ स०॥ ५॥ रूप ने गुण अञ्जना तणो, प्रगट हुवो छै लोक में तामक। ते पवनकुमार पिण सांभल्यो, जब प्रहस्त मन्त्री ने कहे छै. आमक॥ कहे आपां जावां रूप फेरने, जोवाने अंजना तणो रूप शिणगारक। पीछे मतो करी दोनूं नीसला, ते आप ऊभा महल तले तिण वारक॥ स०॥ ६॥ हिवे पवनजी निरखे छै अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली रह्यो द्रिष्टक। रूप में जाणे देवांगणां, वाणी बोले जाणे कोयल वाणक। चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्यां जाणै मृगनैन समानक॥ स०॥ ७॥ अञ्जना बैठी सिंघासणे, दोनूं पासे अनेक सखियां तणा वृन्दक। वस्त्र आभूषण अंगे भला, शोभ रही जाणे पूनम चंदक॥ हिवे बसन्त माला इम उचरे, थाई ने जोग

राजवी, राय प्रह्लाद विद्याधर तानक। तेहनो पुत्र अति दीपतो, पवनकुमार छै तेहनो नानक॥ अञ्जना ने वर योग छै, ए राजा कियो वचन प्रमाणक। पीछे दूत मेल्यो तिण नगरी में, सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक॥ स०॥ ५॥ रूप ने गुण अञ्जना तणो, प्रगट हुवो छै लोक में तानक। ते पवनकुमार पिण सांभल्यो, जब प्रहस्त मन्त्री ने कहे छै. आनक॥ कठे आपां जावां रूप फेरने, जोवाने अंजना तणो रूप शिणगारक। पीछे मतो करी दोनूं नीसरया, ते आय ऊभा महल तले तिण वारक॥ स०॥ ६॥ हिवे पवनजी निरखे छै अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली रखो दिष्टक। रूप में जाणे देवांगणां, वाणी बोले जाणे कोयल माणक। चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्या जाणै मृगनैन समानक॥ स०॥ ७॥ अञ्जना बैठी सिंघासणे, दोनूं पासे अनेक सखियां तणा वृन्दक। वस्त्र आभूषण अंगे धरया. शोभ रही जाणे पूनम चंदक॥ हिवे बसन्त माला इम उचरे, बाई ने जोय

राजवी, राय प्रह्लाद विद्याधर नामक। तेहनो पुत्र अति दीपतो, पवनकुमार छै तेहनो नामक॥ अञ्जना ने वर योग छे, ए राजा कियो वचन प्रमाणक। पीछे दूत मेल्यो तिण नगरी में, सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक॥ स०॥ ५॥ रूप ने गुण अञ्जना तणो, प्रगट हुवो छै लोक में नामक। ते पवनकुमार पिण सांभल्यो, जय प्रहस्त मन्त्री ने कहे छै. आमक॥ कहे आपां जावां रूप फेरने, जोवाने अंजना तणो रूप शिणगारक। पीछे मतो करी दोनूं नीसऱ्या, ते आय ऊभा महल तले तिण वारक॥ स०॥ ६॥ हिवे पवनजी निरखे छै अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली रख्यो दिष्टक। रूप में जाणे देवांगणां, वाणी बोले जाणे कोयल वाणक। चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्या जाणै मृगनैन समानक॥ स०॥ ७॥ अञ्जना बैठी सिंघासणे, दोनूं पासे अनेक सखियां तणा वृन्दक। वस्त्र आभूषण अंगे धऱ्या, शोभ रही जाणे पूनम चंदक॥ हिवे वसन्त माला इम उचरे, धाई ने जोग

राजवी, राय प्रह्लाद विद्याधर नामक। तेहनो पुत्र अति दीपतो, पवनकुमार छै तेहनो नामक॥ अञ्जना ने वर योग छै, ए राजा कियो वचन प्रमाणक। पीछे दूत मेल्यो तिण नगरी में, सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक॥ स०॥ ५॥ रूप ने गुण अञ्जना तणो, प्रगट हुवो छै लोक में नामक। ते पवनकुमार पिण सांभल्यो, जव प्रहस्त मन्त्री ने कहे छै. आसक॥ कहे आपां जावां रूप फेरने, जोवाने अंजना तणो रूप शिणगारक। पीछे मतो करी दोनूं नीसऱ्या, ते आय उभा महल तले तिण वारक॥ स०॥ ६॥ हिवे पवनजी निरखे छै अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली राखी दिष्टक। रूप में जाणे देवांगणां, वाणी बोले जाणे कोयल वाणक। चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्यां जाणै मृगनैन समानक॥ स०॥ ७॥ अञ्जना बैठी सिंघासणे, दोनूं पासे अनेक सखियां तणा वृन्दक। वस्त्र आभूषण अंगे धऱ्या, शोभ रही जाणे पूनम चंदक॥ हिवे वसन्त माला इम उचरे, धाई ने जोग

जाई एक बालिका, अञ्जना कुंवरी छै तेहनो नामक
॥ सती रे शिरोमणि अञ्जना ॥ १ ॥ मात पिता नें
बाहली घणी, बंधव सगलां ने गमती अत्यन्तक
रूप में छै रलियामणी, नेण दीठां घणो हरष धरं
तक ॥ सजन सगा ने सुहामणी, सखी सहेलिया
में रही नित खेलक। विद्या भणी मुख अति घणी,
दिन दिन बधे जिम चम्पक बेलक ॥ स० ॥ २ ॥
अञ्जना कुंवरी मोटी हुई, चिन्तवी ने राय चित्त
मझारक। पछै वेग प्रधान तेड़ावियो, कहे अञ्जना
बर तणो करो रे विचारक ॥ जब एक कहे रावण
नें दीजिये, एक कहे दीजे मेघ कुमारक। ते पुत्र
छै राजा रावण तणो, निणरो जोबन रूप घणो
श्रीकारक ॥ स० ॥ ३ ॥ जब एक कहे इम सांभलो,
बरष अठारमें मेघ कुमारक। चारित्र लेसी वैराग
सूं, बरष छावीस में जासी मोक्ष मझारक ॥ तो
कन्या ने सुख किहां थकी, सगलाई कर देखो मन
में विचारक। मेघ कुमार ने यो मती, और विचारो
कोई राज कुमारक ॥ स० ॥ ४ ॥ रतनपुरी तणो

राजवी, राय प्रह्लाद विद्याधर तानक। तेहनो पुत्र अति दीपतो, पवनकुमार छै तेहनो नामक॥ अञ्जना ने वर योग छै, ए राजा कियो वचन प्रमाणक। पीछे दूत मेल्यो तिण नगरी में, सगपण कीधो छै मोटे मण्डाणक॥ स०॥ ५॥ रूप ने गुण अञ्जना तणो, प्रगट हुवो छै लोक में तानक। ते पवनकुमार पिण सांभल्यो, जय प्रहस्त मन्त्री ने कहे छै आनक॥ कडे आपां जावां रूप फेरने, जोवाने अंजना तणो रूप शिणगारक। पीछे मतो करी दोनूं नीसल्या, ते आय ऊभा महल तले तिण वारक॥ स०॥ ६॥ हिवे पवनजी निरखे छै अञ्जना, प्रहस्त नीची घाली रह्यो दिष्टक। रूप में जाणे देवांगणां, वाणी बोले जाणे कोयल वाणक। चम्पक वरण चतुर घणी, आंख्या जाणे मृगनैन समानक॥ स०॥ ७॥ अञ्जना बैठी सिंघासणे, दोनूं पासे अनेक सखियां तणा वृन्दक। वस्त्र आभूषण अंगे धरा, शोभ रही जाणे पूनम चंदक॥ हिवे वसन्त माला इम उच्चरे, बाई ने जोय

जोड़ी मिली श्रीकारक। जेहवो पवनजी जाणिये, तेहवी पामी छै अञ्जना नारक ॥ स० ॥ ८ ॥ हिवे बीजी सखी इम उचरे, पहला तो वर मन चिन्तव्यो जेहक। तेहवा पवनजी वर नहीं, बरस अठारह में चारित्र लेहक ॥ पांचूं इन्द्री ने जीपतो, बरस छावीस में पामसी मोक्षक। तिण कारण वर वर्जियो, कन्या ने वर तणो जाणियो द्वेषक ॥ स० ॥ ६ ॥ हिवे अञ्जना सुण इम उचरे, बाई धन २ ते नर नों अवतारक। कर्म करणी करी काटने, वेगा हो जासी मुगति मझारक ॥ गुण गाइजे तिण पुरुष ना, पवनजी सुणी ने धरयो अति द्वेषक। आ तो रे नार कुलक्षणी, मन मांही उपनो क्रोध विशेषक ॥ स० ॥ १० ॥ हिवे पवनजी मन मांहि चिन्तवे आ रूप में रुवड़ी अत्यन्त वखाणक। मन मांहि मेली रे पापणी, चित्त चोखो नहीं एक ठिकाणक ॥ पुरुष पराया सूं मन करे, तो हिवे करणो कौन उपायक। जो छोड़ूं तो एहनें वर घणा, परणी ने परहरूं ज्यूं दुःख थायक ॥ स० ॥ ११ ॥

आशीष केतुमती मातक ॥ लूण उतारै रे बैनड़ी, रूप देख मन हरषित थायक। जाचक बोले बिरुदावली, इणविध पवनजी परणवा जायक ॥ स० ॥ १५ ॥ सेना सिणगारी चतुरङ्गिणी, गाजेजी अम्बर बाजैंजी तूरक। स्वजन सगा मिलिया घणा, जान चाले जाणे गङ्गा नों पूरक ॥ वर विद्याधर द्वीपतो, शोभ रह्यो तिणरो वदन सनूरक। चिहुं दिशा साथे सेवक घणा, हाथ जोड़ी रह्या ऊभा हजूरक ॥ स० ॥ १६ ॥ महिन्दपुरी नेड़ा आविया, आई वधाई राजी हुवो रायक। दीधी वधामणी तेहनें, हरषित हुई अञ्जना तणी मायक ॥ आरती नों महोच्छव करे, महिन्द राजा मन हरष न मायक। स्वजन सगा मिलिया घणा, सेना लेई राजा साहमोजी जायक ॥ स० ॥ १७ ॥ महिन्द राजा साहमो आवियो, ढोल दमामा ने घूरे निशाणक। राजा हो राणी सहु मिल्या, व्यापियो, तिमर ने आंथम्यो भाणक ॥ सुसरो सामेलै आवियो, पवनजी देखने आनन्द थायक। धवल

२१॥ हिवे पवनजी परण ने उतर्या, कीधी पहरावणी अञ्जना नो तातक। गयवर आपिया अति घणा, ताजा तुरङ्ग दीधा विख्यातक॥ कनक रत्न बहु आपिया, आपी छै रूपा तणी बहु कोड़क। बसन्तमाला दासी आदि दे, पांच सै दासियां सरीखी जोड़क॥ स०॥ २२॥ हिवे परणी ने रतनपुरी संचर्या, साहमो आयो तिहां प्रह्लाद रायक। अञ्जना मन हरषित थई, सासु सुसरा ना पूजिया पायक॥ पांच सौ गांव राजा दिया, आप्या छै आभरण रतन बहु मोलक। आया छै बीन्द ने बीन्दणी, आया छै तिहां बाजते ढोलक॥ स०॥ २३॥

---

## ॥ दोहा ॥

हिवे कितोक काल गयां पीछे, आयो भेटणो राय। तिहां पवन रो द्वेष परगट हुवे, ते सुणज्यो चित्त लाय॥

बैठा लीला करो; पुत्र जाया नों एह प्रमाणक। इम कहिने आयुधशाल संचर्या, हाथ में धनुष ने लीनो छै बाणक ॥ स० ॥ ३० ॥ पवनजी चाले रे कटक में, मन मांहे चिन्तवे अञ्जना नारक। दूर थकी पांय लागसां, भाव कुभाव देखां एक वारक ॥ बसन्तमाला मांहरी बैनड़ी, दही नों कचोलो तूं भरी ने आणक। सुकन रूड़ा मनावस्यां, मारग मांहे उभी रही आणक ॥ स० ॥ ३१ ॥ सुकन मिसे पिउ देखस्यां, ननग करी ने हूं लागसूं पायक। लोक सहु इम जाणसी, दही नों कचोलो देखसी तायक ॥ कटक जातां पिउ वांदस्या; जाण से अञ्जना आदरी पवन कुमारक। जिहां लगे स्वामी आवे नहीं, तिहां लगे मनमें करूं रे सन्तोषक ॥ स० ॥३२॥ हिवे गयन्द बैसी दल संचर्या, मात पिता ने नमावियो शीशक। सज्जन सहु रे सन्तोषिया, अञ्जना ऊपर अति घणी रीसक ॥ दूर थकी दृष्टि पड़ी, चतुर चितारा नों जोवो चितरामक। पूतली लिखी रम्भा सारखी. एह चितारा-ने

देवो इनामक ॥ स० ॥ ३३ ॥ मन्त्री कहे नहीं पूतली, भींत ओटे ऊभी अञ्जना नारक। सांभल पवन कोप्यो घणो, कांई मिली मोने मारग मझारक ॥ दूर ठेली आघी करी, आशा अलुधी मेली आयो जातक। बसन्तमाला मोंडे कड़का, मुख न देखावज्यो तुम तणो नाथक ॥ स० ॥३४॥ अंजना कहे दासी भणी, पोते छै म्हारे अति घणा पापक। गेहली ए गाल न बोलिये, कटक जाता कांई दीधो सरापक। आशा मोटी मन मांहरे, कांई कुसांवण काढियो एहक। देई ओलंभा दासी भणी, मांह झाली ले गई घर मांहक ॥ स० ॥ ३५ ॥ हिवे अञ्जना कहे सुण सुन्दरी, मोने दुःख मांहे दुःख उपनो आजक। पाणी मांहे करी पातली, सासरे पीहरे गई मांहरी लाजक ॥ चारित्र लेवो मोने सिरै, करणी करी सारूं आतम काजक। नाम जपूं जगदीश नों, तेह सूं पामिये अविचल राजक ॥ स० ॥३६॥ हिवे नगर थकी दल संचलो, मारग में दूर किपो रे मलाणक। चकवो चकवी

तिहां टलवले, व्यापियो तिमिर ने आंधम्यो भाणक ॥ पवनजी मन्त्री ने इम कहे, अंजना नों मूल न लीजिये नामक। पुरुष पराया सूं मन करे, चकवा चकवी नी परे मूकी छे नारक ॥ स० ॥३७॥ मन्त्री कहे सुणो कुंवरजी, तुमे एवड़ो कांई आणो मन में भरमक। मोटकी सती छे अंजना, अहो निशि सेवती जिन तणो धर्मक। पुरुष परायो वंछे नहीं, वचन काजे तुमे कांय करो द्वेषक ॥ आ शील सरोवर झूलती, गुण किया शिव गामी जाण विशेषक ॥ स० ॥ ३८ ॥

## ॥ दोहा ॥

पवन सुणी मन्त्री तणो, कोमल थयुं निज चित्त।
पवनजी मन्त्री ने कहे, सुणो हमारा मित्त ॥ १ ॥
खोटो ए कारज मैं कर्यो, सन्तापी निज नार।
वचन वरां से दुहवी, करवो कषण विचार ॥ २ ॥
मो मन में प्यारी वसे, जाणूं मिलिये जाय।
लोके लाज रहे नहीं, मन मन में मुर्झाय ॥ ३ ॥

## ॥ दोहा ॥

अंजना सती तिण अवसरे, बैठी सामायिक मांय। कर्म धर्म संभालती, रही धर्म लव ल्याय॥ वसन्तमाला तिण अवसरे, हाथ जोड़ी कहै आन। सती रे सामायिक निहां लगे, राजा करो विश्राम ॥ १ ॥

## ॥ ढाल तेहिज देशी ॥

हिवे अंजना सामायिक पूरी करी, हाथ जोड़ी लागे पिउ ने पायक। पवनजी कहे तूं मोटी सती, लीन रही श्रीजिन धर्म मांहिक॥ वचन यरां से मैं दुहवी, मैं तने कीधो अनाव अगाधक। हाथ जोड़ी करूं विनती, खमज्यो सती म्हारो अपराधक॥ स० ॥ ४२ ॥ अंजना पाय नमी कहै, एहवा बोल बोलो कांई स्वामक। जेहवी पग तणी मोजड़ी, तेहवी पुरुष ने स्त्री जाणक॥ हाथ जोड़ी ने आन ऊभी रही, मधुर सुहामणा बोलती वैणक। कहे स्वामि विप किन पालिये, जाणे पत्थर गाली ने

बीजाई धन दियो रे विशेषक। घणी सन्तोषी छै वचन सं, बसन्तमाला हुई हरप विशेषक॥ प्रहस्त मन्त्री ने इम कहै, जतन कीज्यो कुंवरजी ना तेहक। कुशले खेमे वेगा पधारज्यो, म्हे षाट जोवां जाणे उमस्यो मेहक॥ स०॥ ४७॥ सीख देवे अंजना चालतां, रण मांहे आवे घणा पुरुप दुष्टक। सौ पुत्र आवे छै वरुण ना, तेहने आगल रखे फेरवो पूठक॥ दुरजन कटक छै वरुण नों, लोहना बाण जाणे मुके अङ्गारक। तिहां क्षत्री तणी रीत राखज्यो, मरण भलो पिण नहीं भली हारक॥ स०॥ ४८॥ हिवे पोल थकी रे पाछी वली, नैणा में छूटी छै जल तणी धारक। मैं कटुक वचन कह्यो कंथ ने, मुंह ढांकी ने रोवै तिण वारक॥ बसन्त-माला आय धीरज देवे, हिवे आयो छै सामायिक कालक। देव गुरु धर्म हिये धरो, व्रत पचक्खाण थे लेवो संभालक॥ स०॥ ४९॥ हिवे अंजना सती तिण अवसरे, रूड़ी रीत पाले व्रत रसालक। कर्म धर्म संभालती, सुखे गमावे छै इण विध

देखाल के छेदसूं देहक ॥ तेरे घड़ी रे टेरी रही, थाजे छै ताड़णा रोवती तेहक। बसन्तमाला इम मुख भणे, चोर तो पवनजी सहि तेहक ॥ स० ॥ ६० ॥ हिवे कालो रे रथ अणावियो, कालाई तुरंग जोतख्या छै दीपक। काला ही वस्त्र पहराविया, काली हो झूरसी दीधी छै तेहक ॥ काली हो मस्तक राखड़ी, अंजना ने वसन्तमाला बैसाणो ताहक। अंजना चाली पीहर भणी, दुःख घणो धरती मन मांयक ॥ स० ॥ ६१ ॥ हिवे चालियो रथ उतावलो, आयो छै बाप तणी भूम तेहक। दूर थी मेहल देखिया, सारथी रथ पाछो वाल्यो तेहक ॥ जुहार करी अञ्जना भणी, सारथी चित्त मांहे चिन्तवे आमक। दुष्ट अकारज मैं कियो, मैं वन मांहे अञ्जना मेली इण ठामक ॥ स० ॥ ६२ ॥ हिवे सांझ पड़ी दिन आंथम्यो, रयण विहाणी घोर अन्धकारक। हाथो हाथ सूझे नहीं, इण वेला मुझ ने कुण आधारक ॥ नाम जपूं जगदीश नों, इण विध काढे दुःख भारी रातक। शुद्ध सामायिक

राखी पोलिये, मालूम कीधी राय ने जायक। दोनूं हाथ जोड़ी नीचो नमी, अञ्जना बाहिर उभी छै आयक॥ राय सांभल हरषित हुवो, नगर शिणगार ने करो विख्यातक। सनमुख मोकलो पालखी, आघो तेडावो राय प्रह्लाद नों साथक॥ स०॥६७॥ कान में छाने सेवक कहे, अञ्जना सासरे जे हुवो लेहक। तिण बात कही सर्व मांडने, राय सांभल दुःख व्यापियो देहक॥ मुरच्छागत आय धरणी दल्यो, सचेन थयो कीधो क्रोध विशेपक। म्हारा कुलने कलङ्क लगावियो आयथा मत यो मांहरी पोल मझारक॥ स०॥ ६८॥ पोलियो पाछो आवी कहे, तुम ऊपर रूठो छे महिन्द्ररायक। मांहे आयथा मत यो एहने, वचन सुनी ने विलखी थायक॥ माता रा भवन नें संचरी, आघा पाछा पग पड़े तिण वारक। मन मांहे दुःख धरती थकी, विलखी थई आवी माताने द्वारक॥ स०॥ ६९॥ मानवेगा तिण अवसरे, आंगने अंजना दीठी विरङ्गक। शरीर नो रङ्ग तो फिर गयो, काला वस्त्र

काया नहीं धरे, पवनजी आयवारी राखे छै आशक ॥ स० ॥ ७३ ॥ इम कही दोनूं पाछी निकली, भाई भोजायां तणे घर जायक। बन्धव मांहे बैसी रया, अंजना आंगणे उभी छै आयक॥ आय भोजायां मिली तिहां, मन विना तिणा आपी छै बाहक। आंगुली टेई दांतां धरी, आयवा न दीधी तिण ने घर मांयक ॥ स० ॥ ७४ ॥ इम अञ्जना पर घर हिण्डी घणी, किणहि न दीधी आयवा घर मांहेक। दीन वचन मुख बोलती, नयण झरे मुख रोवती तेहक॥ भूख तृषा करी आकुली, अन्न पाणी आपे कुण तानक। उभी छै दीन दयामणी, नांखे निसासा उभी तिण ठामक ॥ स० ॥ ७५ ॥ हिवे मिलने भोजायां ते इम कहे, थाई थे आपरो आपो संभालक। धरसूं जी डाखा क्यूं नी हुवा, एह कस्यो जिसो कर्म चण्डालक॥ अने तो अबला स्यूं करा, आंगणे उभा रहो न छिगारक। इम पर आपा राय जाणसी, तुम तणा वीर ने काढसी मारक ॥ स० ॥ ७६ ॥ बंधवा दिण ही

पर्वत विषमी ठामक ॥ जिहां सूर्य किरण न संचरे, रात दिवस नी खबर न कांयक। मानुष को मुख नहीं देखिये, तिण वन मांहे तूं मुकने छे जायक ॥ स० ॥ ८० ॥ हिवे वसन्तमाला तिण अवसरे, अंजना नों वचन कियो परमाणक। दोनूं जणी तिहां थी निकली, मांहो मांहि बोलती मोहकारी वाणक ॥ उजड़ वन मांहि संचरी, जोयने परवत रूपल महन्तक। खान्धे लेई अञ्जना भणी, परवत बैठी जाय एकन्तक ॥ स० ॥ ८१ ॥ अञ्जना वन मांही संचरी, लोक मांहो मांहि बोले छै एमक। अञ्जना ने बाहिर काढने, राय कीधो अति भूण्डो जी कामक। आप देवाड़ी रे घर घरे, आवया नहीं दीधी किण ही घर मांहक। पेट नी पुत्री ने परहरी, राय नी अकल गई दकायक ॥ स० ॥ ८२ ॥ हिवे माता कहे छै दासी भणी, अञ्जना ने जोवो रही किण ठामक। दासी कहे वन में गई, हा ! हा ! देव सूं कीधोए कामक ॥ म्हारी कूखे ए उपनी, बालपणे हुन्तो अति घणो

ऊपरे, कोई अचिन्त्यो धसको पड़ज्यो जायक ॥ स० ॥ ८६ ॥ अंजना कहे सुण सुन्दरी, मांहरो बाप छै चतुर सुजाणक। माता विचक्षण अति घणी, भाई छै मांहरा घणा बुद्धिवानक ॥ पिण पाप छै मांहरे अति घणा, तूं मन मांहे मूल न आणै रोसक। आपां पूरव पुण्य कीधा नहीं, ए सहु आपणे करमां रो दोपक ॥ स० ॥ ८७ ॥ हिवे गिरवर गुफा स्हामो जोवतां, तिहां दीठो छै मुनिवर ध्यान वर धीरक। निर्दोष आचार पालता, तप जप खप करी शोपव्यो शरीरक ॥ अवधि ज्ञाने करी आगला, अञ्जना जाय भेट्या तसु चरणक। अति दुःख मांहि आनन्द हुवो, भव भव होज्यो स्वामी तुम तणो शरणक ॥ स० ॥ ८८ ॥ हिवे हाथ जोड़ी अञ्जना कहे, पूर्व किसुं कियो कर्म चण्डालक। किण करमां स्वामी मांहरे, इण भव में आयो अणहुन्तो आलक ॥ सासरा सूं काढी मो भणी, पीहर राखी नहीं घर मांहक। आप कृपा करो मो ऊपरे, सगलाई सम्बन्ध देवो नी

हनुमन्त कुमारक। दीठो तिण मोत्यां रो झुमखो, कूदी ने चञ्चल दीधी छै फालक॥ तोड़ी मोत्यां लड़ भूई पड्यो, अञ्जना मुरछा पामी तिण वारक। तब मामो लेई पुत्र भणी, आण मेल्यो अंजना हिये पासक॥ स०॥ १०६॥ थांद झाली मैठी करी, मामो बोले तिहां बोल रसालक। कहे देश परदेश में हूं फिरयो, पिण एहवो कठे ही न देख्यो बालक॥ एहवा वचन कहे अंजना भणी, आयो छै हणुपाटण मझारक॥ करे महोच्छव अति घणो, नाम दियो हनुमन्त कुमारक॥ स०॥ १०७॥ अञ्जना हनुमन्त इहां रहे, पवनजी पहुंचा छै लंकापुरी जायक। तिहां रावण राजा सूं मुजरो कियो जब रावण बोले छै एहवी वायक। पवनजी आद राजा भणी, थे मेघपुरी जाय करो मेलाणक। वरुण राजा ने हटाय ने, वर्तावज्यो तिहां मांहरी आणक॥ स०॥ १०८॥ हिवे मेघपुरी दल संचयो, साहना बरसे तिहां बाणना मेहक। पिण पवनजी पग नहीं चातरे, मांहो

मांहि मनुष्य मुवा घणा तेहक ॥ वर्ष दिवस विग्रहो रह्यो, पछे मांहो मांहि मेल कियो ताहक। आण वरतावी रावण तणी, पवनजी हरष पाम्यो मन मांहक ॥ म० ॥ १०९ ॥ हिवे कटक आयो रे लङ्का भणी, राजा रावण ने कियो जुहारक। जब रावण वस्त्र वागा आपिया, वले आप्या छै शोभता घणा शिणगारक ॥ केई एक दिन राखियां पछे, रावण सीख दीधी तिण वारक। पवनजी आदि राजा भणी, ते आया छै निज नगर मझारक ॥ म० ॥ ११० ॥ पवनजी कुशले घर आविया मात पिता नमे लाग्या छै पायक। उठके माता भोजन करे तेहने अञ्जना ने घर जायक ॥ सूनां रे महल खालिया देखिया, कूरले छै तिहां अति घणा कागक। पूरब वीती ते वात काना सुणी जब पवन रे लागी छै अति घणी आगक ॥ म० ॥ १११ ॥ हिवे पवनजी तिहां थी निकल्या, माता पिता आई लार तिण वारक ॥ बांह झाली पवन ने इम कहे हिवे ना जिमो क्याह ही आहार

रक। हूं बहू ने आण मंगवांपसूं, पवनजी सांहमो न जोवे रे तानक। यांह छोड़ाय माता कने, गया छै राजा महिन्द ने गानक॥ स०॥ ११२॥ हिवे माता रोवे मुख ढांकने, काम विमासी नहीं कीधो रे एहक। दल भणी जन नहीं मोकल्या, अञ्जना ने नहीं राखी रे गेहक॥ काची रे बुद्धि नारी तणी, केतुमती राणी चिन्तवे एमक। धिग् २ मुझ जीवत भणी, मैं पापणी कीधो अति भुण्डो कामक॥ स०॥ ११३॥ हिवे पवनजी कहे मन्त्री भणी, हूं सासु सुसरा सूं किम करूं प्रणामक। मांहरी माता तेहने पराभवी, तिण सूं सासरा नें गई मांहरी मानक। हिवे ऊंचो हुई किम बोलसूं, हिल मिल ने वात करूंला केनक। वले अञ्जना राणी नो ऊपरे, किण विध घेरली हरष ने प्रेमक॥ स०॥ ११४॥ मन्त्री कहे सुणो कुमरजी, आपां तो गया था कटक मझारक। लारे सूं काडी अञ्जना भणी, आपरो दोष नहीं छै लिगारक॥ इम कहे पवन कुमर

लक। आंगन न राखी रे अथ घड़ी, कलंक सुणी ने काढी ततकालक ॥ स० ॥ २२१ ॥ एहवा वचन सुणी मालिका तणा, पवनजी दूर फेंक दियो छै थालक। महिन्द्रराय आप पाये पड्यो, तब मन्त्री कहे तूं मूर्ख गिंवारक ॥ कलंक री सुध कीधी नहीं, गिगर विचारियां काढी रे बालक। अकल भ्रष्ट हुई तांहरी, कटुक वचन कह्या तिण वारक ॥ स० १२२ ॥ हिवे महस्ल मन्त्री कहे पवनने, थांके छै सुख थी एहवी वायक। उठो स्वामी हिम वैसी रह्या, अंजना नी खबर करो वेग जायक ॥ मूई छै के अथवा जीवती, सुख दुःख भोगवे छै किण ठामक। एहवा वचन सुनी मन्त्री तणा, अंजना ने दोनूं जोवा छै तामक ॥ स० ॥ १२३ ॥ हिवे महेन्द्र राजा तिण साथे हुवो, वले प्रह्लाद राय आगो लेई साथक। वले माता तिण आई छै रोवती, मांगल पुत्र वह मांहरी बालक ॥ अहे खबर करायां अंजना तणी, थे तो जावो निज नगर मझारक। नारी

काजे लाज छोड़ो मति, पवनजी नहीं मानी बात लिगारक ॥ स० ॥ १२४ ॥ तब अनेक विमाण चलाविया, वले शूरमां पुरुष फेला असवारक। ठाम ठाम जोवे अंजना भणी, मुख सूं बोले छै पवन कुमारक ॥ जो सती लाभे तो हूं जीवसूं, नहीं तो अकाले करदेसूं कालक। देश परदेश फिरतां थकां, अंजना सुनी छै निज मोसालक ॥ ॥ स० ॥ १२५ ॥ जब पवनजी चाल्या छै आगले, पीछे आवे छै सगलो जी साथक। जब बसन्त-माला पवनजी ने ओलख्या, कहे अंजना ने आव्यो छै तुम तणो नाथक ॥ जब अंजना आय पाये पड़ी, खोला में बैसाड्यो हनुमन्त कुमारक ॥ स० ॥ १२६ ॥ बसन्तमाला आय पाये पड़ी, हीयासूं भीड़ी पवन कुमारक। कहो बाई दुःख तुम किम सह्या. किम सही मांहरी नाथ नी मारक ॥ किम करी बनफल वीणिया, किम करी रही वन मझा-रक। किम करी काल गमावियो, किम करी पाल्यो हनुमन्त कुमारक ॥ स० ॥१२७॥ स्वामीजी

अञ्जना पवनजी रायक। आज्ञा लेई हनुमंत कुमार नी, तीनूं ही लीधो संयम सुख दायक ॥ स० ॥ १४९ ॥ मास मास खमणे करे पारणो, शरीर सूखाई दुरबल करी कायक। तीनांरी नसां जाल दीसे जुई जुई, हाल्यां चाल्यां घणी वेदना थायक। तीनूं जणा वैराग सूं, च्यारूं आहार पचक्खी कीधो संथारक। केवल ज्ञान उपाय ने, कर्म तोड़ी गया मुक्ति मझारक ॥ स० ॥ १५० ॥

॥ इति अञ्जना सती रो रास सम्पूर्णम् ॥

पहिलां हुयो, पीछे पदमोत्तर रायो। तीजी कथा मणरथ राजा नी, ते सुणज्यो चित्त लायो॥ रा० ॥ ३ ॥ जंबुद्वीप रा भरत क्षेत्र में, नगर सुदरशण भारी। धन सूं पूरण देवत सुन्दर, रैयत सुखी राजा री॥ रा० ॥ ४ ॥ मणरथ राजा रे धारणी राणी, ऋद्धि तणो विस्तारो। हाथी घोड़ा ने रथ पायक सेना, वरते चौथो आरो॥ रा० ॥ ५ ॥ स्वचक्र ने परचक्र केरो, विरोध नहीं तिणवारो। मणरथ राजा रे जुगबाहु भाई, मांहो मांहि छै प्यारो॥ रा० ॥ ६ ॥ पांच इन्द्री ना भोग भोगवंता, नाटक पड़े दिन रैणो। विविध प्रकार नो क्रीड़ा करतां, विषय विरोध मंडाणो॥ ॥ ७ ॥ मणरथ राजा राज भोगवतां, चढ़ियो महल उदारो। तिण अवसरे मैंणरया दीठी, जुगबाहु नी नारो॥ रा० ॥ ८ ॥ रूप देखी ने राजा अचरज पाम्यो, अहो अहो रूप तुमारो। इण राणी ने हूं महल में राखूं, सुख विलसूं संसारो॥ रा० ॥ ९ ॥ मणरथ राजा कर मनसुबो,

धारो। वचन माता नों सांभल राजा, लाज्यो छे तिणवारो ॥ रा० ॥ २४ ॥ मैणरथा मन मांहे जाण्यो, पड़ियो राजा म्हारे लारे। तो कासीद मेलूं धणी ने, वेगा आवज्यो इण वारे ॥ रा० ॥ २५ ॥ थोती वात लिखी कागद में, जीवती जाणो मोने। तो पाछा घरे वेगा आवज्यो, दगो कियो छे थांने ॥ रा० ॥ २६ ॥ कासीद कागद दियो तलाव सूं, जुगबाहु ने जाई। कागद बांचने जुगबाहु जाण्यो दगो कियो छे भाई ॥ रा० ॥ २७ ॥ इम जाणी ने जुगबाहु चलियो, ढील न कीनी कांई। मुहूरत नहीं महलां जावण रो नीमित्तिये वात बनाई ॥ रा० ॥ २८ ॥ जुगबाहु तो डेरा बारे कीना, नगरी में नहीं आयो। मणरथ राजा रो डर जाणी ने, राणी धनी कने जायो ॥ रा० ॥ २९ ॥ मैणरथा मित्र आर धणी री, पर पुरुष प्रीत न जाणी। प्रत आर रो राख्वण मारू. जतन करे छे राणी ॥ रा० ॥ ३० ॥ मैणरथा तो पहुंती तलाव मूं, पिव सूं वात

राखज्यो, जावजीव परिहारो ॥ रा० ॥ ४५ ॥ मोरा प्रीतमजी थे राग द्वेष दोई, बंध करनां रा जाणो। कलह अभ्याख्यान पैशून्य चाड़ी, पर परिवाद पच्चक्खाणो ॥ रा० ॥ ४६ ॥ मोरा प्रीतमजी रति अरति इन जाणो, माया मोसो नहीं भलो। पाप अठारे त्रिविध वोसराऊं, मिथ्या दरशण सलो ॥ रा० ॥ ४७ ॥ मोरा प्रीतमजी मरण तणो भय न आणो, धर्म साचो करि जाणो। परभव में ते साथे चालसी, गांठे बांध्यो नाणो ॥ रा० ॥ ४८ ॥ मोरा प्रीतमजी थे मोह थकी मन वालो मोह में जीव मती घालो। करो आलो-यणा कारज सरे ज्यूं, मन राखो कोई सालो ॥ रा० ॥ ४९ ॥ मोरा प्रीतमजी दश दृष्टान्तै, मनुष्य जमारो दोहिलो। इण भव में जो पुन्य करे तो, परभव सुख सोहिलो ॥ रा० ॥ ५० ॥ मोरा प्रीतमजी ज्ञाने विचारो, सुपनारी माया जाणो। डाभ अणी जल बिन्दु जिम जाणो, मन में समता आणो ॥ रा० ॥ ५१ ॥ मोरा

पाले ॥ रा० ॥ ५८ ॥ मित्र हुवे ते मरण सुधारे, करे पर उपकारो। दे सरदहणा सूंस करावे, ते विरला संसारो ॥ रा० ॥ ५९ ॥ धन छै संसार में मैंणरया राणी, मोह धणी नों निवाखो। आप तणो भरतार जाणी ने, तिण उपदेश देई ने ताखो ॥ रा० ॥ ६० ॥ मैंणरया मन मांहि जाण्यो, पकड़ेलो मोने रायो। वेष बदलने परी निकली, दासी नाम धरायो ॥ रा० ॥ ६१ ॥ डेरा मांह सूं तो वारै निकली, गई उजाड़ रे मांयो। पूरी आपदा कोई नहीं साथे, राणी रे कुंवर जायो ॥ रा० ॥ ६२ ॥ जिण जायां देशोटन हुन्ता, बांटता राज वधाई। विषय वियोग में कुंवर जायो, जोईज्यो करम कमाई ॥ रा० ॥ ६३ ॥ चांपो पाछैलो राणी डरपे, रखे आवेलो कोई लारो। इम जाणी ने कुंवर ऊंचायो, हुई करमा रे सारो ॥ रा० ॥ ६४ ॥ कोमल काया ने कारण पड़ियो, पांव पड़े नहीं ठायो। कुमर तो राणी निमतो न जाण्यो, बालक मेले वन मांयो ॥ रा० ॥ ६५ ॥

कांदियो, मैणरहा रे सन आया ॥ रा० ॥ ८४ ॥
समवसरण सूं नेड़ा आया, विमाण सूं उतरिया ।
कर वन्दना ने सुणे व्याख्यान, कारज सगळा
सारिया ॥ रा० ॥ ८८ ॥ जुगबाहु नो देवता हुवो,
उभो छै उमंग आणी । सेवक नो कर जोड़
हरषत है, जय जयकार मुख वाणी ॥ रा० ॥८९॥
इण आगे स्वामी आय ऊभा, हुवा हमारा नाथो ।
कुण गुरु नी सेवा कीनी, ध्यान दियो छै हाथो ॥
॥ रा० ॥ ९० ॥ ज्ञान करी ने देवता दीठो, पूरव
भव नो विचारो ॥ जुगबाहु नो हमारो नामज
सुन्तो, मैणरहा म्हारी नारो ॥ रा० ॥ ९१ ॥
मैणरहा रे कारण मोने मणरथ भाई मारो । दे
धारणा ने सुंत करायो, मैणरहा मोने तारो ॥
रा० ॥ ९२ ॥ उपगारी नो गुण जाणी ने, देवता
दरशण जायो । देखूं मैणरहा कुण ठिकाने, बैठी
समोसरण मांयो ॥ रा० ॥ ९३ ॥ परगट रूप
कीनो छै देवता, प्रभु ने प्रदक्षिणा दीधी । साधु
साध्वी ने वन्दना करने, मैनरया ने वन्दना कीधी ॥

पाछा पलतां ने सावज खायो, गयो नारकी मांयो ॥ रा० ॥ ११६ ॥ दोनूं राजा रो मरण हुवो, खबर हुई नगरी मांई। मैंणरख्या तो निकल नाठी, तिण री खबर न कांई ॥ रा० ॥ ११७ ॥ संसार नों तो कारज कियो, राज जुगवल्लभ ने दियो। किण ने दोष न दीजे प्राणी, करम आपरा कियो ॥ रा० ॥ ११८ ॥ जुगवल्लभ तो राज करे छै, वरते छै चौथो आरो। पाप तणी मन में थोड़ी आवे, पिण ते दुःख वरते माता रो ॥रा०॥११९॥ नमी कुमार तो मोटो हुवो, विरह पड्यो राजा रो। नमी कुमार ने राज वैसाड्यो, सुख विलसे संसारो ॥ रा० ॥ १२० ॥ जुगवाहु तो देवता हुवो, मैंणरख्या संयम पाले। जुगवल्लभ ने नमी भाई, दोनूं राज रूखवाले ॥ रा० ॥ १२१ ॥ आठ करम छै महा जोरावर, जीवां ने फोड़ा पाड़े। न्यारा ने तो न्यारा कीना, करमप खेल दिखाड़े ॥ रा० ॥ १२२ ॥ दोनूं राजा राज भोगवन्ता, अटवी पड़ी है सीमाड़े। भूमि आपणी राखण सारूं, करे राजवी राड़े ॥

सुणी ने, चिन्ता फिकर मन आई। जुगवल्लभ तो कहे माता ने, जाय मिलूं हूं भाई ॥ रा० ॥ ॥ १४५ ॥ ठीक नहीं छै नमीराय ने, यो छै म्हारो भाई। नहीं विश्वास राजविया केरो, तिण सूं मिलूं हूं पहेली जाई ॥ रा० ॥१४६॥ जुगवल्लभ ने तो दियो समझाई, नमीराय कने जाय। सतियां नजर पड़ी राजा री, विनय करी सामो आय ॥ ॥ रा० ॥ १४७ ॥ हाथ जोड़ी ने राजा बोल्यो, महासतियां किन आई। का सूं कारण पड़ियो थांरे, इसड़े अवसर मांई ॥ रा० ॥ १४८ ॥ कांई कारण थांरे दोनूं राजा रे, झगड़ो पड़ियो मांहो मांई। फौज बन्धी तो थे भेली कीनी, तिण कारण हूं आई ॥ रा० ॥ १४९ ॥ बाप मारयो ने मा निकल भागी, गई ए किण रे लारे। देखो ने ए म्हारी धरती लेसी, कही सनमुख माता रे ॥ १५० ॥ बेटा थे छो राजविया रा, बोलो बोल विचारो। और थां ऊपर कुण चढ़ आसी, भाई छै ओ थारो ॥ रा० ॥ १५१ ॥ जुगवल्लभ ने

इण सती केरो, यश लीधो जग मांई ॥ रा० ॥ १५९ ॥ राज कचेड़ी में आई बैठा, जुगवल्लभ नमी भाई। जुगवल्लभ सुख अथिर जाणी ने, वैरागरी मन में आई ॥ रा० ॥ १६० ॥ जुगवल्लभ कहे मोने दीक्षा लेण द्यो, राज करो महारायो। राज ऋद्धि ने सर्व संपदा, मैं थाने भोलायो ॥ रा० ॥ १६१ ॥ जुगवल्लभ तो दीक्षा लीधी, हरष घणो मन मांई। भाई विछोहो दुःखरी लहरां, नमी कुमर ने आई ॥ रा० ॥ १६२ ॥ नमी राजा तो राज करे छै, राणी एक सौ आठो। हुवे नाटक ने घुरे नगारा, दोनूं राज रो पाटो ॥ रा० ॥ १६३ ॥ दाघ ज्वर ने जोग करी ने, लेसी संयम भारो। इन्द्र परीक्षा करवा आसी, उत्तरा-ध्ययन विस्तारो ॥ रा० ॥ १६४ ॥ दोनूं भायां रे मेल करायो, मैंणरखा पाछी आई। गुरणीजी रे पाय लागने, विध सूं वात सुणाई ॥ रा० ॥ ॥ १६५ ॥ मोटा राजा रे मेल करायो, राखी घणारी धाजी। मैंणरखा ना गुण जाणी ने, गुरणी

हुई छै राजी ॥ रा० ॥ १६६ ॥ छत्तीस हजार आरज्यां मांहे, गुरणी चन्दनबाला। तिण रे पाटे पदवी पाई, शिष्यणी रतना री माला ॥ रा० ॥ १६७ ॥ चेड़ानी जे साते पुत्री, भगवन्त आप बखाणी। चेलणा मृगावती तीजी प्रभावती, चौथी शिवादे राणी ॥ रा० ॥ १६८ ॥ पांचवीं पद्मावती छठी सुलसा, जेष्ठा सातमी जाणी। संकट पड्यां सती शीलज राख्यो, दमयन्ती नल राणी ॥ रा० ॥ १६९ ॥ अञ्जना सती छै महिन्द राजा नी बेटी, विरचो मल्यो वन मांहीं। संकट पड्यां सती शीलज राख्यो, यश कीरत जग मांहीं ॥ रा० ॥ १७० ॥ सती द्रौपदी तो आगे हुई, यश लीधो जग मांई। मोटा राजा रो विरोध मिटायो, मैंणरखा री अधिकाई ॥ रा० ॥ १७१ ॥ संयम लेने सुकृत कीज्यो, मनुष्य जमारो मत खोज्यो। जिन शासन में जिम मैंणरखा कीनो, तिम सब कोई कीज्यो ॥ रा० ॥ १७२ ॥ मैंणरखा तो दीक्षा लेई, मन शुद्ध संयम पाले। जिन मारग में नाम

जाणी सेवे भव प्राणी, ते पामे निरवाणो ॥रा०॥ ॥ १८० ॥ जप तप संयम पालो रे भाई, विषय विकार गमाई। जीव जिके तो शिव सुख पावे, श्रीवीर वचन मन लाई ॥ १८१ ॥

---

## अथ श्रीनवकार नो छन्द।

सुख कारण भविषण समरो नित नवकार। जिन-शासन आगम, चौदह पूरवनो सार ॥ १ ॥ ए मंत्रनी महिमा, कहितां न लहुं पार। सुरतरु जिम चिन्तित, वंछित फल दातार ॥ २ ॥ सुर दानव मानव, सेवा करे कर जोड़। भुवि मण्डल विचरे, तारे भविषण कोड़ ॥ ३ ॥ सुरछंदे विलसे, अतिशय जास अनन्त। पद पहिले नमिये, अरि गंजन अरिहन्त ॥ ४ ॥ जे पन्दरह भेदे सिद्ध थया भगवन्त। पंचमी गति पहोंता, अष्ट कर्म करि अन्त ॥ ५ ॥ कल अकल स्वरूपी, पंचानन्तक देह। जिनवर पाय प्रणमुं, बीजे पद वलि एह ॥

अरिहंत सिद्ध सब साधुजी जिन आज्ञा धर्मसार।
मंगलीक उत्तम सदा, निश्चय शरणाचार ॥ २५ ॥
घड़ी घड़ी पल पल सदा, प्रभु समरण को चाव।
नरभव सफलो जो करे, दान शीयल तप भाव ॥२६॥

## ॥ दोहा ॥

सिद्धां जैसो जीव है, जीव सोई सिद्ध होय।
कर्म मैलका अंतरा, बूझे विरला कोय ॥ १ ॥
कर्म पुद्गल रूप है, जीव रूप है ज्ञान।
दो मिलकर बहुरूप है. विछड्यां पद निरवाण ॥२॥
जीव करम भिन्न भिन्न करो, मनुष्य जन्मकूं पाय।
ज्ञानातम वैराग्य सें. धीरज ध्यान जगाय ॥ ३ ॥
द्रव्य थकी जीव एक है, क्षेत्र असंख्य प्रमाण।
काल थकी सर्वदा रहे, भावे दर्शन ज्ञान ॥ ४ ॥
गर्भित पुद्गल पिंड में. अलख अमूरति देव।
फिरे सहज भव चक्र में, यह अनादि की टेव ॥५॥
फूल अतर घी दूध में. तिल में तेल छिपाय।
यूं चेतन जड़ करम संग, बंध्यो ममत दुःख पाय ॥६॥

बहु बीती थोड़ी रही, अब तो सुरत संभार।
परभव निश्चय चालणो, वृथा जन्म मत हार ॥१५॥
चार कोस ग्रामांतरे, खरची बांधे लार।
परभव निश्चय जावणो, करिये धर्म विचार ॥१६॥
रज विरज ऊंची गई, नरमाई के पान।
पत्थर ठोकर खात हैं, करड़ाई के तान ॥ १७ ॥
अवगुण उर धरिये नहीं, जो हुवे विरप बबूल।
गुण लीजे कालू कहे, नहीं छाया में सूल ॥ १८ ॥
जैसी जापे वस्तु है, वैसी दे दिखलाय।
वाका बुरा न मानिये, वो लेन कहां से जाय ॥१९॥
गुरु कारीगर सारिखा, टांकी वचन विचार।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार ॥ २० ॥
संतन की सेवा कियां, प्रभु रीझत है आप।
जाका बाल खिलाइये, ताका रीझत बाप ॥ २१ ॥
भवसागर संसार में, द्वीपा श्री जिनराज।
उद्यम करि पहुंचे तिरे, बैठी धर्म जहाज ॥ २२ ॥
निज आतम कूं दमन कर, पर आतम कूं चीन।
परमातम को भजन कर, सोई मत परवीन ॥२३॥

गणधरादिक सब साधुजी, समकित व्रत गुण धार ।
यथायोग्य वंदन करूं, जिन आज्ञा अनुसार ॥३॥

प्रथम पद नमस्कार गुणवो ॥

## ॥ दोहा ॥

पञ्च परमेष्ठी देवनो, भजनपुर पहिचान ।
कर्म अरी भाजे सवी, शिवसुख मंगल थान ॥४॥
अरिहंत सिद्ध समरूं सदा, आचारज उवझाय ।
साधु सकलके चरणकुं, वन्दूं शीश नमाय ॥ ५ ॥
शासन नायक समरिये, वर्द्धमान जिनचन्द ।
अलिय विघन दूरे हरे, आपे परमानन्द ॥ ६ ॥
अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भण्डार ।
जे गुरु गौतम समरिये, मन वंछित फल दातार ॥७॥
श्रीजिन युगपद कमल में, मुझ मन अलिय वसाय ।
कब उगे वो दिनकरु, श्रीमुख दरशान पाय ॥८॥
प्रणमी पद पंकज भणी, अरिगञ्जन अरिहंत ।
कथन करूं हिवे जीवनुं, किंचित् मुझ विरतंत ॥९॥

साधारण वनस्पतिकाय का जीव एक मुहूरत में ६५५३६ जनम मरण करे ॥ ६ ॥

बेइन्द्री जीव एक मुहूरत में ८० जनम मरण करे ॥ ७ ॥

तेइन्द्री जीव एक मुहूरत में ६० जनम मरण करे ॥ ८ ॥

चऊइन्द्री जीव एक मुहूरत में ४० जनम मरण करे ॥ ९ ॥

असन्नी पंचेन्द्री जीव एक मुहूरत में २४ जनम मरण करे ॥ १० ॥

सन्नी पंचेन्द्री जीव एक भव करे।

॥ इति सासउसास को थोकड़ो सम्पूर्णम् ॥

## ॥ मोक्ष मार्गनो थोकडो प्रारम्भीए छे ॥

श्रीगौतम स्वामीजी महाराज हाथ जोड़ी मान मोड़ी वन्दणा नमस्कार करके श्रवण भगवंत श्री महावीर देवने पूछता हुआ।

प्र०—हो भगवान! सन्नी २ सगला मुगत जावेगा असन्नी २ सगला अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी सन्नीका दो भेद, एक मनुष्य दूजा तिर्यञ्च, मनुष्य कुंतो मुगती छे तिर्यञ्च कुं मुगती नहीं।

प्र०—हो भगवान मनुष्य २ सगला मुगत में जावेगा तिर्यञ्च तिर्यञ्च अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से?

उ०—हो गौतमजी! मनुष्य का दो भेद एक समदृष्टि दूजा मिथ्यादृष्टि। समदृष्टि कुं मुगत छे मिथ्यादृष्टि कुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान! समदृष्टि २ सगला मुगत में जावेगा मिथ्यादृष्टि २ अठे रह जावेगा?

परै, बोलै मीठा बोल। भ०। भीतर कड़वी कुट-कसी, बाहिर करै किलोल। भ०। च० ॥ ७ ॥ खिण रोवै खिण में हंसै, खिण मुख पाड़ै थूंब। भ०। खिण राचै विरचै खिणे, खिण दाता खिण सूम। भ०। च० ॥ ८ ॥ धर्म करतां धुंकल करै, ऐसी नार अलाम। भ०। बन्दर ज्यूं नचावै निज कंथनै, जाणै कै असल गुलाम। भ०। च०। ॥९॥ नारीने काजल कोटरी, ए वेहुं एकज रंग। भ०। काजल नर कालो करै, नारि करै शील भंग। भ०। । च० ॥ १० ॥ नारी नै वन वेलड़ी, दोनूं एक सभाव। भ०। कंटक रूंख कुशील नर, तिण स्यूं वेहुं लग ज्यात। भ०। च० ॥ ११ ॥ नाम छै अबला नार नो, पण सबली छै इण संसार। भ०। सबला सुर नर तेहनै, निबला कर दिया नार। । भ०। च० ॥ १२ ॥ सुर नर किन्नर देवता, त्यानै पिण वश किया नार। भ०। नाख्या नरक निगोद में, त्यांरी तो बन्ध ने बार। भ०। च० ॥ १३ ॥ नैण वैण नारी तणा, वचनज तीखा

॥ मा० ॥ ३६ ॥ ए गुण धार्यां जी सुख लहे, पावे मोक्ष प्रधान। देवलोक मांहिं वासो मिले, देखो नवतत्व ज्ञान ॥ मा० ॥ ३७ ॥ तिहां विण सुख जे सुर तणा, रत्नजड़ित आवास। गहणा गांठा जी नवा नवा, अधिकी जोत प्रकाश ॥ मा० ॥ ३८ ॥ सामायिक ने पोसा करो, सद्गुरुरो सुणो रे बखाण। प्रतीते धर्म पालजो, तो पर नव अमर विमाण ॥ मा० ॥ ३९ ॥ शीयल व्रत संजम आदरो, निश्चे धरो मन मांय। ज्युं सुख पावो जी शास्वता, पिसे चिनयोजी ज्ञान ॥ मा० ॥ ४० ॥ संवत् अठारे गुणपासीये, जोड़ी मन शुद्ध धार। वीर प्रभुजी इम कहैं, छोड़ो आल जंजाल ॥ मान न कीजे रे मानवी ॥ ४१ ।

## कर्म सज्झाय।

देव दानव तीर्थंकर गणधर, हरिहर नायर रबरा। कर्म प्रमाणे सुख दुःख पावा, सबर

(गाथा) "पुरुसा तुम मेव तुम्मीनं" हे पुरुष तांहरो तूंहीज मित्र छे तूं बाहिर मित्र किंवास्तुं वंछे छे (गाथा) "जिनं मोढसी अप्पाकप्पावीक्काय" इत्यादिक कह्यो जीव ए तांहरो आत्मांज कर्मा नो कर्त्ता. एहीज भुगतना. एहीज वेदना. एहीज दुःखनो दाता. एहीज सुखनो दाता. एहीज वैरी. एहीज मित्र. एहीज पर उपकारनो करणहार. तिवास्तुं ज्ञान दर्शन चारित्र सहित आत्मा ऊपर परम प्रतीत राखिये. एह टाली ने किण ही सचित अचित वस्तु ऊपर स्नेह न करिवो (गाथा) "अनिस्नेह निस्नेह करहिं जे आपस्तुं स्नेह करे छे. तांहरे त्यां स्युं प्रिय निस्नेह थई रहवो. ए केवली नो वचन छे. वले कह्यो छे (गाथा) "स्नेह पासा भयंकरा" ए स्नेह रूपी पासा महा भयना करणहार छे. तिणसुं रे जीव ए वीतराग नो वचन विचारी नें किणस्युं ही स्नेह मत कर जगतना सर्व जीवांस्युं तांहरे पूर्वे एक २ स्युं अनन्ता २ सगपण किया. इम जाणी राग टालिये रे जीव तूं तांहरा निज गुण निहाल, तांहरा

# साधु मुनिराजके २२ परीषह।

१ असाता वेदनी कर्मसे—

क्षुधा १ तृषा २ शीत ३ उष्ण ४ दंशमशक ५ चर्या (चलने का) ६ शैया (सोने का) ७ वध (किसीके मारने का) ८ रोग ९ मलमैल १० तृण स्पर्श ११

२ ज्ञानावर्णी से—

अज्ञान (विशेष ज्ञान न होने का खेद नहीं) १ प्रज्ञा (ज्ञान पाके भी अभिमान न करे)

मोहनी से ८—

१ दर्शन मोहनी से—

अदर्शन (वीतराग धर्ममें श्रद्धा रक्खे) १

२ चारित्र मोहनी से—

अरति (धर्म में नाराजी हो अरतिको न लावे) १ अचेल (वस्त्र नहीं लिये अथवा नग्न रहने [illegible]) २ स्त्री (स्त्री देखकर [illegible] ३ निषद्या [illegible]

रूप, नमन किये हुवे अमर विनाय। देव देख तुरत निमकार ॥ वां० ॥ ३ ॥ स्वप्नो दुस्ने वीरजी रे बड़, जनम मरण लेवणरा काट। देखे आप नमो आकार ॥ वां० ॥ ४ ॥ नन्दी देखे केवीह तन, तुम्ह आवणरा कीधा मून। विविधे नाणा पर अडार ॥ वां० ॥ ६ ॥ अकलिन्त ने अवनत आना, वीरजीने वचने रघ्राज राना। घरई तुरवना भण्डार ॥ वां० ॥ ७ ॥ नेनारजने जीवनान, मोक्ष नगर में कीधो वान। जननां हुवे जयजयकार ॥ वां० ॥ ८ ॥ ए इग्यारे ब्राह्मन जान, परमजीसे निकल्या साथ। ज्यां कर दीनो लेवो पार ॥ वां० ॥ ९ ॥ इण नामे सहु आशा फले, रोगी दुसमन दूरे टले। ऋद्ध वृद्ध पावे सुखकार ॥ वां० ॥ १० ॥ इण नामे सब म्हारे पाप, जिनरो अविधे अविचण आप। चित्त चोखे हिरदा में धार ॥ वां० ॥ ११ ॥ समत अठारे नयालीसे आप, पूज जेमलजीरी अदल थाप। चौमासे स्तवन किये विचार ॥ वां० ॥ १२ ॥ असाढ सुद ७

## रह ढाल की वड़ी साधु वंदना।

### दोहा।

अरिहंत सिद्ध साधु नमो, नमतां कोड़
ल्याण। साधु तणा गुण गायसां, मनमे
ानन्द आण ॥ १ ॥ गुण गाऊं गिरुवां तणा,
। मोटे मंडाण। गिरुवा सहजे गुण करे, सीझै
छेत काम ॥ २ ॥ इणहिज अढी द्वीपमें, जग-
ा जगदीश। भाव करी वंदना करूं, उच्छुक
। अति लीन ॥ ३ ॥ भाव प्रधान कह्यो तिसै,
में भावज जाण। तें भावे सघकूं नमूं, अनन्त
ीसी नाम ॥ ४ ॥ उठ प्रभात समरो सदा,
ु वंदना सार। गुण गावो मोटा तणा, पाप
सब जात ॥ ५ ॥

### ढाल १ ली।

॥ चाल चौपाईनी ॥

पंच भरत पंच ऐरव जाण, पंच महाविदेह

बखाण। जेह अनंत हुआ अरिहंत, कर जोड़ी प्रणमूं ते संत ॥ १ ॥ जे हिवड़ां विचरै जिन चन्द, क्षेत्र विदेह सदा सुखकन्द। कर जोड़ी प्रणमूं तसु पाय, आरत विघन सहु टल जाय ॥ २ ॥ सिद्ध अनन्ता पनरै भेद, ते प्रणमूं मन धरिय उमेद। आचारज प्रणमूं गणधार, श्री उव-ज्झाय सदा सुखकार ॥ ३ ॥ साधु सदा प्रणमूं केवली, काल अनादि अनंत वली। जे हिवड़ां विचरै गुणवंत, साधु साधवी सहु भगवंत ॥ ४ ॥ ते सहु पणमूं मन उल्लास, अरिहंत सिद्ध नै साधु प्रकाश। साधु वंदना करूं हितकार, ते सांभ-लज्यो सहु नरनार ॥ ५ ॥

## दोहा।

इणही जम्बू द्वीप में, भरतज नामे क्षेत्र। जिनवर वचन लही करी, निरमल कीधा नेत्र ॥ ॥ १ ॥ तिहां चौवीसे जिन हुवा, ऋषभादिक महावीर। पूर्व भव करी प्रणमिये, पामीजै भव

रत्न सचलिन, पद्म प्रभुजी नै वांदूं नित्त। पूर्व
भव जे सुन्दर बाहु, तेह सुपार्श्व प्रणमूं जग नाहु
॥ ४ ॥ पूर्व भव दृगबाहु मुनीश, चंद्र प्रभु
प्रणमूं निशदीश। जुगबाहु पूर्वभव जीव, प्रणमूं
सुविध जिनंद सदीव ॥ ५ ॥ लहुबाहु पूर्वभव
मत, श्री शीतल प्रणमूं हुलास। दीन राई कुल
तिलक समान, प्रणमूं श्री श्रेयांस प्रधान ॥ ६ ॥
इन्द्रदत्त मुनिवर गुणवंत, वासुपूज्य वांदूं भग-
वंत। पूर्वभव सुन्दर बडभाग, वांदूं विमल धरी
अनुराग ॥ ७ ॥ पूर्वभव जे राय महेन्द्र, तेह
अनंत जिन प्रणमूं सुखकंद। साधु शिरोमण
सिंहरथ राय, धर्मनाथ वांदूं चितलाय ॥ ८ ॥
पूर्वभव मेघरथ गुण गाऊं, शान्तिनाथ जिनवर
चितलाऊं। पूरवभव रूपी मुनि कहिये, कुंथुनाथ
प्रणम्यां सुख लहिये ॥ ९ ॥ राय सुदर्शन
मुनि विख्यात, वांदूं अरजिन त्रिभुवन तात।
पूरवभव नन्दन मुनिचंद, ते प्रणमूं श्री मल्लि
जिनंद ॥ १० ॥ सिंह गिरि पूरव भव सार,

## ढाल ३ जी।

॥ चाल—राग वेलावली ॥

चंद्रानन जिन प्रथम जिनेश्वर, दूजा श्रीसुचंद भगवन्तक। अग्निसेण तीजा तीर्थङ्कर, चौथा श्री नन्दसेण अरिहंतक॥ त्रिकर्ण शुद्ध सदा जिन प्रणमूं ॥ १ ॥ ऐरव, क्षेत्र मझारे चौवीसक, ऋषभादिक स्वामी अनुक्रम हुवा, एक समैं जन्म्या जगदीशक ॥ त्रि० ॥ २ ॥ पंचमा इसिदिन्न मुनीजै, ववहारी छट्ठा जिनरायक। सोमचंद सातमा जिन प्रणमूं, जुत्तिसेन आठमा सुखदायक ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ नवमा अजितसेण जिन प्रणमूं, दशमा श्री शिवसेण उदारक। देव सर्मा इग्यारमा ध्याऊं, बारमा निक्खित्त सत्थ सुखकारक ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ तेरमा असंजल जिन तारक, चउदमा श्री जिननाथ अनन्तक। पनरमा उपसन्त नमीजै, सोलमा श्री गुत्तिसेण महंतक ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ सतरमा अतिपास सुणीजै प्रणमूं

अजिया राणी सती। सागर लाखे नवकोड़ अंतरे,
केवली जे थया वन्दिये शुभ परे। शुभ परे सुमत
जिणेसर गणधर, चमरकासवि अज्जया। नेऊ सहंस
कोड़ सागर, विच नमूं जे सिद्ध थया॥ श्रीपद्म-
प्रभु शिष्य नामी, सुव्यय, ऋषि वन्दिये, साहुणी
ते रई नामे, प्रणम्यां दुख दूर निकन्दिये॥ १०॥
कोड़ सहंस नव सागर विच वली, प्रणमूं मुनिवर
जे थया केवली। श्री सुपास विदर्भ गुणदधि
प्रणमूं सोमा समणी गुण निधि॥ ११॥ ऊ०॥
गुण निधि नवसे कोड़ सागर, अंतरै जे केवली।
तेह प्रणमूं भाव स्यूं ए, दुःख जावै सहु टली॥
श्रीचन्द्र प्रभु दीन गणधर, सती समणा ध्याइये।
नेऊ सागर कोड़ अंतरै, केवली गुण गाइये॥१२॥

## ढाल ५ मीं।

॥ सफल संसार अवतार ए हूं गिणूं—पदेशी॥

सुवध जिणेश मुनिवरा ए, साहुणी वन्दिये
चित्त उछाह ए। अंतरो कोड़ नव सागर सहु

बलदेव धारणी पूतरी माई। वीस वरस संयम-धरी सीख्या, चवदै पूरव सूत्र री माई ॥ १५ ॥-रुक्मणी कृष्ण कहूं कुमर परजन्न, जम्बुवती सुत सम्बरी माई। परजन्न सुत अनिरुद्ध अनोपम, जास वेद रवि अम्बरी माई ॥ १६ ॥ श्री० ॥ समुद्र बिजै शिवा देवी रा नन्दन, सच नेमी दृढ़ नेम-री माई। बारे अंगै सोला वरसे, रमणी पचासे तेम री माई ॥ १७ ॥ श्री० ॥ समुद्र-विजय सुत मुनि रहनेमी, ए सहु राज कुमाररी माई। कर्म हणीने मुक्ते पहुंता ते प्रणमूं वारम्वार री माई ॥ १८ ॥ श्री० ॥ यक्षणी आद दे शिष्यणी समणी, आराज्यां सहंस चालीस री माई। साधव्यां सिधि तीन सहंस ते, वान्दूं कुमति टालीसरी माई ॥ १९ ॥ श्री० ॥ पौमा ने गौरी गन्धारी, लखमणा सुसमा नाम री माई। जम्बु-वती सतभामा रुक्मणी, हरि रमणी अभिराम री माई ॥ २० ॥ श्री० ॥ मूलसिरी मूलदत्ता वेऊं, सम्ब कुमर री नार री माई। अन्तगड अंगे ए सहु

तिण प्रति लाभ्यो मुनि पुष्फदन्त, तिहांथी थयो सु जात। तृण सम जाणी सहु ऋद्ध वात, आदरी आठ प्रवचन मात, भवियण तसु गुण गात ॥ ३ ॥ पूर्व भव नृपति धनपाल, विसनण भद्र नै दान रसाल, देई शिवा शिव थाय। संयम लेई ते मुनिराय, लहि केवल ने शिवपुर जाय, ते वन्दूं मन लाय ॥ ४ ॥ पूर्वभव मेघरथ राजान, सुधर्म्म मुनि नै देई दान, बीजै भव जिनदास। संवर पाली जे थया सिद्ध, केवल दरशन ज्ञान समिद्ध, वान्दूं तेह उल्लास ॥ ५ ॥ निन्नाई पूर्वभव जाण, संभूत पिजे नै दीनूं वखाण, कुमर ते धनपत होई। वीर समीपे संयम लीधो, ततक्षिण कर्म हणी नै सीधो दिन प्रति वन्दूं सोई ॥ ६ ॥ पूर्वभव नागदत्त धनेसर, प्रतिलाभ्यो इन्द्रपुर मुनीसर, महियल नाम कुमार। संयम लेई कारज साख्या, भव सायर थी चेतन ताख्या, ते वन्दूं बहुवार ॥ ७ ॥ गृहपति हूंतो धर्म्मघोष, तिण प्रतिलाभ्यो अति संतोष, नाम मुनि

जितशत्रु सुबुद्धि, कर्महणी तिण करी विशुद्धि, ते बन्दूं विख्यात ॥ १३ ॥ मुनि जयघोष विजैघोष वांदूं, वले श्री नाम मृगापुत्र वांदूं। कमलावती इक्षुकार, पुत्र पुरोहित्त वले तसु नार, नाम जसा जन्देगं सारी, वन्दता नित जयकार ॥१४॥

## ढाल १३ वीं।

॥ चतुर विचारिये रे—एदेशी ॥

मुनि इसिदास ने धन्नो वले वखाणिये रे, सुण क्खत्त कत्तिय संयुत्त। संठाण शालभद्र आनन्द तेतली रे, दशार्ण भद्र अंवन्त ॥ १ ॥ मुनि गुण गाइये रे० गावंता परमानन्द। शिव सुख साधने करी अहो निश संपजै रे, भाजे भव भय; द्वन्द ॥ २ ॥ मु० ॥ अणुत्तर अङ्गनी एहिज बीजी वाचना रे, ऐ दश मुनिवर नाम। नन्दी सूत्र में साध सुभद्द पणे कह्या रे, नन्दीसेण अभिराम ॥ ३॥ मु० ॥ विपम नन्दी फल अधिकार धन्नो मुनिरे, धन्नो देव दिन तात। सुव्रता समणी गुरुणी शिष्यणी

मोटो झगड़ा गढ़ सूं, कांई पड़जो फोगट वाद ॥ स० ॥ ५ ॥ वदी चढ़न चमाचोंजी, जाणो घण बादल बीजली, कांई नरपति चढ़न निसाण । आरती रीत सनाहजी सुभटांई रूड़ी आदरो, कांई ए श्रावक अहनाण ॥ स० ॥ ६ ॥ कोड़ भवांरा कीधाजी उडावै पातक आपणा, कांई अचल समाई एक । सुर नर पदवी पावैजी शिवपुर ना सुख लहे शाश्वता, कांई आणन्द लील अनेक ॥ स० ॥ ७ ॥ अफल दिहाड़ो जावैजी पाछो नहीं आवै आपरो, कांई धर्म बिना करी दुन्द । सफल दिहाड़ो तेहिजी जिन देई धर्म समाचरो, कांई जपो वीर जिणन्द ॥ स० ॥ ८ ॥ करणी रूड़ी कीजैजी लाहो भल लीजै कोड़ सूं, कांई अवसर लाधो आज । काल अनन्तो दोहरोजी नहीं छै सोहरो जिन कह्यो. कांई सारो आतम काज ॥ स० ॥ ९ ॥ सम्वत अठारै गुणसठै जी तिथि महासुदि भली सप्तमी कांई शनिवार सुखदाय । चन्द्र भाण सराईजी सनाई रूड़ी रीत सूं, कांई चाड़वास चित्तलाय ॥ स० ॥ १० ॥

ए ॥ १ ॥ घड़ी नीत उचार ए, पासवण एम विचार ए। बे घड़ी ए बे घड़ी पछे जीव उपजै ए ॥ २ ॥ आलस भय करी रात रो, भेलो करी राखै मातरो। इण वात रो, निर्णय हिव तुम सांभलो ए ॥ ३ ॥ खस खस दाणे एवड़ा, जम्बू द्विपे जेवड़ा। एवड़ा, असन्नीआ मुआ घणा ए ॥ ४ ॥ स्त्री पुरुष संयोग में, मृतक जीव विजोग में। इण जोग में, नयर अशुचि नाला भखा ए ॥ ५ ॥ इम हिज खेल में जाणज्यो, नाकरो मेल पिछाणज्यो। वमणज ए, वमणज पित दोन्यूं कह्या ए ॥ ६ ॥ इमहिज लोही राध में, शुक्र तणी मर्याद में। सूको ए, सूको पुद्गल नीलो हुवै ए ॥ ७ ॥ सर्व अशुचि ठाम ए, चवदे स्थानकरा नाम ए। जतनज ए जतनज कोई विरला करै ए ॥ ८ ॥ ज्ञानी पुरुषां देख्या ए, ज्यां आप सरीखा लेख्या ए। जाणज ए जाण पुरुष जयणा करे ए ॥ ९ ॥ नाहना घणा अथाग ए, आँगुल रे असंख्यात में भाग ए। गिराजज ए, गिराज आवे ज्ञानी तणे ए ॥ १० ॥

संसार ॥ ए आंकड़ी ॥ मोह मिथ्यात की नींद में जीवा, सूतो काल अनन्त। भव भव माहें तूं भटकियो जीवा, ते साम्भल विरतन्त ॥ जी० ॥ १ ॥ ऐसा केई अनन्त जिन हुवा जीवा, उत्कृष्टो ज्ञान अगाध। इण भव थी लेखो लियो जीवा, कुण बतावे थांरी आद ॥ जी० ॥ २ ॥ पृथ्वी पाणी अग्नि में जीवा, चौथी वायु काय। एक एक काया मझे जीवा, काल असंख्याता जाय ॥ जी० ॥ ३ ॥ पंचमी काय वनस्पति जीवा, साधारण प्रत्येक। साधारण में तूं वस्यो जीवा, ते सांभल सुविवेक ॥ जी० ॥ ४ ॥ सुई अग्र निगोद में जीवा, श्रेणि असंख्याती जाण। असंख्याता प्रतर एक श्रेणि में जीवा, इम गोला असंख्याता प्रमाण ॥ जी० ॥ ५ ॥ एक एक गोला मध्ये जीवा, शरीर असंख्याता जाण। एक एक शरीर में जीवा, जीव अनन्ता प्रमाण ॥ जी० ॥ ६ ॥ ते मां थी अनादी जीवड़ा जीवा, मोक्ष जावे इण काल। एक शरीर खाली न हुवे जीवा, न हुवे अनन्ते काल ॥ जी०

## पखवाड़ेकी ढाल ।

( [illegible] )

अनादि पाप पीतां जावे, कुमति संग रावन दुःख पावे। सुमति रस पीतां सुख पावे, मिथ्या का भ्रम दूर जावे। एकम कहूं सूं एकलो, चिहुंगति हीन मलीन। कर्म भ्रम वश दुःख सहाय अब, तजो अनादि रीत। प्रीत निज गुण पर मनलावे॥ बीत्यो इम पखवाड़ो जावे॥ १॥ अनादि पुद्गल संग राचो, फिरत भव सिन्धु मझधारो। अरहट घटिका जिम अन्त नाचो, बन्ध वश निज गुण नहिं पाचो। द्वितीया बे बन्धन तजो, राग द्वेष विकराल। द्विविधे धर्म समाचरो सांईं, तोड़ मोह अघ जाल। परम गति अजरामर पावे॥ बीत्यो० ॥ २॥ ममत्व वश राच मिथ्या मत में, अन्ध बाल लीन विषय रस में। अनादि मोह नींद सूतो, चेत हिवे पर पक्ष मत तूं तो। तीज रत्न त्रय आदरो, देव गुरु धर्म धार। शुद्ध श्रद्धा हृदय धरोस सांईं, पुद्गल-स्नेह निवार। आत्म निज

मझार ॥ श्रे० ॥ १४ ॥ अनाथीजी रा गुण गावंतां कटे कर्मां री कोड़। गणि समय सुन्दर इम भणे ज्यांने वन्दूं रे वेकर जोड़ ॥ श्रे० ॥ १५ ॥

## उपदेशिक ढाल।

आउखो टूटी को सान्धो को नहीं रे, तिण कारण मति करज्यो प्रमाद रे। जरा आयाँने शरणो को नहीं रे, हिन्सा टाली ने धर्म आराध रे ॥ आ० ॥ १ ॥ कुटुम्ब कबीलो नारी कारणे रे, मूरख संचै बहुला पाप रे। चोर तणी परे दण्डी झूरसी रे, सहसी इहलोक परलोक सन्ताप रे ॥ २ ॥ धन गडियो लहिनो रह्यो लोक में रे, जाणे पोता दग दूं बताय रे। जीभ थी नवी आवै उतो बोलनो रे, रही ठूंस मनमारी मन मांय रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ ऊंचा चिणाया मन्दिर मालिया रे, दे दे धरती में ऊंडी नींव रे। इक दिन ऊभा छोड़ी चालसी रे, सुखदुःख सहसी अपनो जीव रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ चक्रवर्ती हलधर राणा केशवा रे,

इमि यली इन्द्र सुरांरो नाथ रे। उमगी २ ने सगला आंधन्यां रे, जोयजो कांई अचरज वाली बात रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ जुगलियां रे तीन पल्योपमनो आयुपो रे, लाम्बी ज्यांरी तीन कोस री काय रे। कल्पवृक्ष पूरै ज्यांनि दश जातना रे, बादल जिम गया विलाय रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ भगवन्त चौवीसवां श्री वर्द्धमानजी रे, शक्रेन्द्र बोल्यो इसड़ी वाय रे। स्वामी दोय घड़ी आयुनें बधारज्योरे, जिनि यह भस्मग्रह टल जायरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ वलता श्रीवीर जिनेन्द्र इसड़ी कहै रे, सुन रे शक्रेन्द्र मांहरी वाय रे। तीन काल नें बात हुई नहीं रे आयुपो वधाखो नहिं जाय रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ अस्थिर संसार तजी मुनि नीसख्या रे, करता मुनि नवकल्पी विहार रे। भारंड पक्षीनी ज्यांने उपमा रे, न धरै मुनि ममता नेह लिगार रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ चारित्र पाले रूड़ी रीति सूं रे, देवे वली अपनो छन्दो रोक रे। तुरत विराजे मुनि मुक्ति में रे, पश लई इहलोक ने परलोक रे ॥

आ० ॥ १० ॥ शब्द रूप देखिने समता करो रे, मत करो कोई भणियांरो अहंकार रे। चौथ ऋषिजी कहै शहर जालोर में रे, सूत्र थी मुझ होज्यो निस्तार रे ॥ आ० ॥ ११ ॥

## भगवत स्तुति।

श्री प्रभु नाम सुखकारी नित-नित भजिये रे। मिनख देह तेनें पाई रे, नेम विन पशु जिम खोई रे। मनकी छोड़ कपटाई रे। राग द्वेष रखे नाहीं रे। शिर पै जटा रखावे रे, तनमें भस्म रमावै रे। सदा कन्द मूल फल खाया रे। पानीमें मल-मल न्हाया रे। तनका मैल उतारे रे, अन्दर का मैल धोया नाहीं रे। केशर लगावै पुष्प चढ़ावै प्रतिमा पूजे रे। काशी फिरिया मथुरा फिरिया, तीरथ फिरा घणेरा रे। ढूंढ लई गोकुल सब सारी, विना भजन प्रभु नहीं पाया रे। सूत्र भागवत् गीता देखो रे, सब में हिंसा धर्म निषेध्या रे। कोटि सूरज शशि तारा रे, करै

सभी मिल प्रकाश सारा रे। विना गुरु ज्ञान न होवै रे, इण कलियुग माहीं पाखण्ड मत घणेरा रे, हिंसा धर्म प्ररूपै रे। कहै चांदमल मनकी भरमना मेटो रे, श्री प्रभु मोये मोक्ष पद दीज्यो रे॥

---

## पूज्य श्री श्री १००८ श्री जवाहर-लालजी महाराजके गुणाकी ढाल

म्हारा पूज परमेश्वर स्वामी मुझने प्यारा लागोजी, नाम आपको जंवरीलालजी सघने प्यारा लागोजी। गाम आपको शहर थान्दलो देखनमें गुलज्यारजी। ओस वंशमें उपना, जन्म्यांही पर-माणजी। पिता आपका जीवराजजी माता नाथी बाईजी, उगणीसै बतीसमें जन्म्यांई परमाणजी। उगणीसै अड़तालीसमें दीख्या आप धारीजी। उगणीसै पिचेतरै चैत वद नौमी जानोजी। पूज्य पदवी पाईजी, इण भरतक्षेत्रमें जैन धर्म खूब दीपायोजी। बुद्धि आपकी अति घणेरी कहता न आवे पारजी। सूत्र न्याय अनुकम्पा खब बताई

बहु धर्म। केई मिथ्याती होसी मानवी। मुश्कल निकलेला ज्यांरा भ्रम ॥ ५ ॥ हंस अनारज सुखिया होयसी, दुखिया तो होसी सज्जन लोक। काल दुकाल पड़सी अति घणा, उन्दर सर्पादिक होसी थोक ॥ ६ ॥ रसमें सरसाई थोड़ी होयसी, आऊपो पावेला पूरो नांय ॥ चौमासा लायक क्षेत्र साधने, थोड़ा मिलेला भरत मांय ॥ ७ ॥ साधु श्रावककी पड़िमा विछेद जावसी। शिष्य गुरुरा अविनीत। गुरु चेलाने थोड़ा पढ़ावसी। मुश्कल निकलेला ज्यांरा भ्रम। कुमाणस कलेश घणा होयसी। अल्प होयसी न्यायवन्त। हिन्दू रा जाया नीचा बाजसी। ऊंचा तो बाजसी म्लेछ लोग॥ नीचा कुलरा राजा बाजसी। करसी खोटा-खोटा न्याव। ज्यांरै घरमें लोहड़ो लाधसी, सो धनवन्त कहवाय ॥ सम्वत् उगणीसै वर्ष इकसठे। चित्तौड़-गढ़ कियो चौमास। गुरु नन्दलाल तणे शिष्य जोड़िया। अल्प कियो समास ॥

लौंकासाह श्रावक भए दी मुनिजनने सीख ॥ ८ ॥ भष्म गृह भी टल गया सुधरे कई मुनिराज, संजम रत्न संभाल के सारे आतम काज, श्री भाणूजी रूपरिख विजयरिख तेजरिख, कुंवरजी स्वामी हुए हरजुजी हैं सिख ॥ ९ ॥ गोदोजी स्वामी भए परसराम पुन्यवंत, सित्तरवें पाट पर लोकपणजी स्वामी हुए महंत, पूज्य श्री श्री महारामजी दौलतराम महाराज, तियोत्तरवें पाट पर ऋषि लालचन्द्र मुनिराज ॥ १० ॥ पूज्य हुकमचन्द्र महाराज की सम्प्रदाय विख्यात, पिचोत्तरवें पाट को शोभावे शिवलाल, उदय भए श्री उदय सागर पूज्य चौथमल महाराज. पूज्य श्री श्रीलालजी कोहिनूर सरताज ॥११॥ वर्तमान श्री जवाहिरलाल पूज्य पण्डित रत्न सुजाण गुणियासीवें पाट पर भए आप प्रधान, धन साधू धन साध्वी धन है श्रावक धर्म, धन्यवाद उनको सदा जाणें धर्म का मर्म ॥ १२ ॥ दान शीयल तप भावना आराधि जन कोय, सेवा धर्म साधन किये सुख सम्पति घर